ॐ

अंतर की खोज

पूज्य दादा भगवान

अंतर की खोज

पूज्य दादा भगवान

Paradise Palace
Firoz Kothi, 4, Mall Avenue
Lucknow-226001

ॐ

PREFACE

My Dear Ownself,

"ANTAR KI KHOJ" is a holy book which contains all the blessings in the form of teachings of **"DADA BHAGWAN"** This book is just one drop of the whole Ocean.

This book is an effort to take you close to Dadaji. All the teachings of Dadaji are not mere words but his **"ANTAR KI KHOJ"**. The Divine speaking through Him which is a treasure for all of us. His Divinehood has always been an inspiration for all the others to follow. He has shown the Real Truth, In pure & Simple form that we all can experience & accept.

So we request our readers to take it not just as a book but as a gift of Dadaji to all of us. We are hopeful that while going through the pages of this book one can feel **"DIVINE DADAJI"**.

We always look for your response & suggestions for further erections.

Thanks
My Ownself

ॐ

मेरे निज आत्मा

"दो शब्द"

दादा भगवान की **"अंतर की खोज"** उपहार रूप हमारे सभी गुरू प्रेमियों को भेंट है। यह गुरू की कृपा का एक और रूप है।

आज जड़वाद और भोगवाद के परिणाम स्वरूप जीवन में जो भयंकर अशांति व अतृप्ती फैल गई है उसे दूर करने में आपकी मदद करने हेतु यह **दादा भगवान** की **"अंतर की खोज"** सभी के लिए जीवन दान है। उनके दिव्य जीवन व भीतर की उपलब्धि का एक छोटा सा रूप यह उनके कुछ वचन हैं। उनके भीतर के मंथन से यह अमृत हम सभी के लिए प्रगट हुआ है तो आशा करते हैं कि हमारा प्रयास आपको उनके नजदीक ले जाने का इस पुस्तक हेतु सफल होगा।

इस पुस्तक में कई कमियां हो सकती हैं जिन्हे हम आपकी राय से आगे सुधार कर सकते हैं तो हमें अपनी राय जरूर भेजें।

आपका अपना स्वरूप
ओम्

DADA BHAGWAN'S POINTS

1. Love not your country but your kind. You belong to no particular country. You are Monarch of all you survey.

2. Beloved, when you showed me your face. I gave up the prayers ; as when Moon comes, we break the Fast, when we get well, we stop medicines. We become desireless when we have complete **Vairagya** and thus become immortal then and there.

3. The Noblest Charity is to prevent a man from accepting Charity. The best alms are to show and enable a man to dispense with alms. Help a man to help himself.

4. Realisation of God is impossible without complete renunciation of Sexual desires. You get God when above desires.

5. One and only one moment of determination, complete determination is enough. Whole lifetime without determination is immaterial.

6. Sign of true teacher is that in his presence you get peace of Mind. Divinity, Bliss, Satisfaction, Contentment. Money cannot buy all these. I had hunger and thirst for God, so has everyone they

दादाजी के अनमोल रत्न

1. अपने देश से ही नहीं वरन् सम्पूर्ण मानवता से प्रेम करो, तुम किसी विशेष देश के वासी नहीं वरन् सम्पूर्ण विश्व ही तुम्हारा है। 'वसुदैव कुटुम्बकम्'।

2. हे प्रियतम ! जैसे ही मुझे तुम्हारा दर्शन हुआ मेरी प्रार्थना छूट गई ; जैसे चन्द्रमा का दर्शन होते ही हम व्रत तोड़ देते हैं ; जैसे स्वस्थ होते ही हम औषधि छोड़ देते हैं, इसी प्रकार जैसे ही वैराग्य होता है हम पूर्णतया निष्काम हो जाते हैं और इस प्रकार उसी समय वहीं पर हम अमर हो जाते हैं।

3. उत्तम दान मनुष्य को दान न लेने में समर्थ बना देना है, उत्तम भिक्षा मनुष्य को भिक्षा की इच्छा से रहित बना देता है, मनुष्य की सहायता उसे समर्थ बनाने के लिये ही करो।

4. बिना पूर्ण निश्चय के आत्म साक्षात्कार असम्भव है। सम्पूर्ण इच्छाओं को त्याग कर ही तुम प्रभु को पा सकते हो।

5. पूर्ण निश्चय का केवल एक क्षण ही काफी है। बिना निश्चय के पूरा जीवन भी व्यर्थ है।

6. सत्गुरु के लक्षण यही हैं कि उसके समक्ष आपको मानसिक शांति, दिव्यता, परमानन्द, सन्तोष व तृप्ति मिले। पैसे से ये सब नहीं खरीदा जा सकता। मुझे प्रभु के लिये तीव्र भूख और प्यास थी, ऐसे ही सबमें विद्यमान है। कहते

say—"When **"Chela"** is ready, **Guru** is there". Thus by my **Purusharth**, I realised for the first time that "I am God" and not this body. My body consciousness is gone. So is everyone now. I see nothing but God i.e., that is ME and whenever I forget this Self Enquiry helps me.

7. **Nothing is mine. I came in this world all alone. I brought nothing, So I am non-possessive.**

8. Man can do nothing. God is all pervading. Everything is done automatically by "**Prakriti**" of God. One became many by "**Sankalpa**" and is playing drama, while I am seer and still. Thus I find that I am already "**Mukta**". I was, I am and hereafter am in future too. I am Changeless, Fearless, Egoless, Thoughtless, Deathless, Desireless, Effortless, Invisible, Absolute, Bliss, "**Ashok**", "**Amar**", "**Akarta**", "**SAKSHI**" (Seer), "**Advaita**", "**Sat-Chit-Anand**" Books and prayers are useless and all the objects of the world too are useless and perishable. No "**Karmas**" and "**Dharmas**" can help as it is ego. Only see oneness and sameness of God. I do nothing as everything is done already. All my doubts are gone now. I am determined in self realisation that "I am **Atma**" and not this perishable body anymore as it will leave me.

है-"जब चेला तैयार होता है तब गुरु भी आ जाता है मैंने अपने पुरुषार्थ से प्रथम बार यह जाना कि मैं शरीर नहीं हूं, भगवान् हूं।" मेरी देहात्मबुद्धि खत्म हो गई है। उसी के साथ संसार भी नहीं दिखता, मुझे अब भगवान् के सिवाय कुछ भी नहीं दिखता और मैं ही वो भगवान् हूं। जब-जब इसे मैं भूलता हूं, आत्मानुसंधान से मुझे मदद मिलती है।

7. मेरा कुछ भी नहीं है। मैं इस जगत में अकेला ही आया था, अपने साथ कुछ भी नहीं लाया था। मेरा परिग्रह कुछ भी नहीं है।

8. मनुष्य कुछ भी नहीं कर सकता। भगवान् सबमें रमा हुआ है। भगवान् की प्रकृति से सब कार्य स्वयं ही होता है। एक ही संकल्प से अनेक हो गया है और अभिनय कर रहा है, जबकि मैं साक्षी और शांत हूं। इस प्रकार मैं पाता हूं कि मैं पहले से ही मुक्त था, अभी भी हूं और आगे भी रहूंगा। मैं अपरिवर्तनशील, निर्भय, अहंकार शून्य, निर्विचार, अमर, संकल्प रहित, प्रयत्न रहित, अदृश्य, अनंत, आनंद, अशोक, अकर्त्ता और साक्षी, अद्वैत तथा सत्‌चित् आनन्द स्वरूप हूं। पुस्तकें और प्रार्थनाएं व्यर्थ हैं। संसार के पदार्थ सभी विनाशशील हैं। कोई कर्म या धर्म हमारे मोक्ष में सहायता नहीं कर सकता है क्योंकि यह सभी अहंकार पूर्ण है। सभी व्यक्तियों और पदार्थों में केवल भगवान् का दर्शन करो। मैं कुछ नहीं कर रहा हूं क्योंकि सब पहले से ही बना पड़ा है मेरे सब संशय अब समाप्त हो गये हैं। मेरा यह दृढ़ निश्चय है कि मैं आत्मा हूं, यह शरीर नहीं, क्योंकि यह तो मुझे छोड़ जायेगा।

9. Gita is a song meant for all hearts that aspire love and listen **Guhya Vidya**, though they may be forshaken and lowly born. Books and Prayers are uselsss.

10. 'Oh God ! If I came to Thee and say that you save me from the fires of hell, let me burn in hell. If I say, grant me the joys of paradise, be shut against me, But if I come for thine ownself sake, keep me not away from Thee.

11. A good deed also binds the doer.

12. God is boss of the show.

13. Everything will pass away—passing show.

14. God is everything and everything is God. There is nothing but God, where is not God.

15. Do not give up rose for its thorns.

16. How do you wish to control the mind which does not exist.

17. I created and I can demolish activity.

18. Do not think with your mind, rather surrender unto God.

19. I thought her dying when she slept and sleeping when she died.

9. गीता उन सबके हृदय के लिये मधुर गीत है जो निष्काम प्रेम में लीन रहते हैं और जिनका ध्यान सदा गुह्य विद्या में रहता है चाहे वे कितने भी दुनिया द्वारा ठुकराए गए हों और जन्म से कुलीन न हों।

10. हे प्रभु ! यदि मैं तुझसे आकर कहूं कि मुझे नर्क की अग्नि से बचाओ, तो मुझे उस अग्नि में जलने देना। यदि मैं कहूं कि मुझे स्वर्ग के आनन्द देना तो तुम चाहे स्वर्ग के द्वार बंद कर देना, पर यदि मैं तुमसे तुमको ही मांगने जाऊं तो 'हे हरि ! तुम मुझसे दूर न जाना।'

11. सत्कर्म भी कर्ता को बांधते हैं।

12. प्रभु संसार का संचालक है।

13. सब कुछ परिवर्तनशील है, बदल जायेगा।

14. भगवान् सबमें है और सब कुछ भगवान् है। सर्व में और कुछ नहीं केवल भगवान् है। भगवान् कहां नहीं है ?

15. गुलाब को कांटों के कारण मत छोड़ो।

16. तुम मन को कैसे वश कर सकते हो क्योंकि मन का अस्तित्व ही नहीं है।

17. सक्रियता को मैंने ही आरम्भ किया और मैं ही समाप्त कर सकता हूं।

18. अपने मस्तिष्क से मत सोचो। वरन् भगवान् के शरणागत हो जाओ।

19. जब वह सो रही थी, मैंने उसे मृत समझा और जब मर गई तो मैंने समझा कि वह सो रही है।

20. The only thing we have to fear is "Fear" itself.

21. Swimming is impossible when there is no water.

22. Neither seek, nor avoid. Take what comes.

23. The word 'Detatchment' has suffered so much misunderstanding that people in general have been decrying the word, and trying to escape from what constitutes that obligatory duties and even life as such. In fact the world is a glorious place to live in and no religious master has ever condemned it.

24. Much wants more.

25. It is four-o-clock. Sons of a barren woman battled in the waters of mirage, stars of the day struck on thou's foreheads, shot arrows made of horns of hares. Oh sky ! surrender to me. Thy Indigo or the ghost is coming to assist me. **"JAGAT MITHYA"**.

26. No man, who thinks of woman as his wife, can ever perfect be, See God only"—(Christ).

27. Man is man when he is free.

28. Spirituality should not be confounded with Morality. Morality is hypocracy.

20. हमें केवल भय से भयभीत होना चाहिये।

21. जहां पानी न हो वहां तैरना असम्भव है।

22. न कुछ पाने का प्रयत्न करो न ही बचने का जैसा जीवन आये, उसे उसी प्रकार स्वीकार करो।

23. असंगता को बहुत गलत समझा गया है। साधारणतया लोग इसे कर्त्तव्यों से भागना समझते हैं, वास्तव में तो संसार रहने के लिये बड़ी सुंदर जगह है तथा किसी धर्म गुरु ने इससे भागना नहीं सिखाया।

24. पदार्थों का आधिक्य पदार्थों की ओर अधिक इच्छा जागृत करता है।

25. जिस प्रकार बांझ का पुत्र होना, मृगतृष्णा के जल में स्नान करना, दिन में तारे निकलना, खरगोश के सिंगों के तीर बनना मिथ्या है, ऐसे ही **जगत भी मिथ्या** है।

26. जो पुरुष स्त्री को पत्नी देखता है, वह पूर्ण नहीं हो सकता, केवल भगवान ही देखो।

27. मनुष्य तभी मनुष्य है जब वह स्वतंत्र है।

28. अध्यात्मिकता नैतिकता नहीं है। नैतिकता तो बनावट है।

29. "Satguru" transforms, attracts and helps you to inherit the hidden treasure of the Self.

30. Meditation attains perfection when it is no longer necessary to meditate again.

31. True Meditation is a state of thoughtlessness and actionless. Then you are related to the Self, otherwise you are related to the external.

32. Love is not an action, it becomes your nature. It is a state of Self. Love all alike. You can't love another.

33. Knowledge of non-difference from supreme Brahma is the means. Your determination is wanted.

34. Salt and Sea become one.

35. Suppression of Desire is not spirituality.

36. Seer and Seen become one. See nothing but God, even in a dog.

37. The human brute (Nastik) does not worship because of his ignorance of God and the Jiwan Muktas do not worship because they have realised God in themselves. Outwardly both appear same.

38. Christ—"Unless you are born again, you cannot see the kingdom of God. Now Christ does not believe in re-incarnation i.e., birth after death.

29. सद्गुरु तुमको आकर्षित करता है, बदल देता है तथा आत्मा के गुण खजाने को प्राप्त करने में तुम्हारी सहायता करता है।

30. ध्यान तभी पूर्ण होता है जब ध्यान करने की आवश्यकता न रह जाये।

31. वास्तविक ध्यान अकर्त्ता व निर्विचार होना है तब तुम आत्मा से जुड़े होते हो नहीं तो तुम संसार से जुड़े होते हो।

32. प्रेम कोई क्रिया नहीं है यह तो तुम्हारा सहज स्वभाव है। सबको समान प्रेम करो। दूसरा समझ कर तुम प्यार नहीं कर सकते।

33. पूर्ण ब्रह्म की अखण्डता का ज्ञान एक साधन है। इसके लिये तुम्हारे दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है।

34. नमक और सागर एक हो जाते हैं।

35. कामनाओं का दमन आध्यात्मिकता नहीं है।

36. दृष्टा और दृश्य एक हो जाते हैं और कुछ नहीं। कुत्ते में भी केवल भगवान् देखो।

37. नास्तिक उपासना नहीं करता क्योंकि वह भगवान् को नहीं जानता और जीवन मुक्त भी उपासना नहीं करता क्योंकि उसने स्वयं में ही भगवान् को पाया है—ऊपर से देखने में दोनों समान दिखते हैं।

38. (क्राइस्ट) जब तक तुम्हारा दुबारा जन्म नहीं होता तुम प्रभु के साम्राज्य में प्रवेश नहीं पा सकते। वैसे तो क्राइस्ट पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते—तब दोबारा जन्म लेने से उनका

Then what does he mean by born again ? He means new birth by hearing through the Lips of Guru. All realise themselves **"Atma"** after hearing the **Satguru**. Hereafter they get salvation i.e., **Mukti**. Hence they are free from death and re-birth right here and now.

39. Man is 2% physical and 98% mental and spiritual. Physical claims most of our attention; time and energy. We have really forgotten God.

40. Oh mother mine, make me thine, make my life Divine.

41. As Atma, you are Birthless, Deathless and Changeless for-ever.

42. Self realisation is Self-recollection, Self discovery and Self recovery.

43 We are here to make our lives. "Tele" i.e., teach **Real Vidya**, so that other lives may be better and happier than they would have been without us. We send forth our love and our good influence. Now they pray God every minute.

44. Spiritual healing reaches into every part of man's being.

45. If we have sufficient faith to allow the light of 'Spirit' to shine through us into a sick mind or a lonely

क्या अभिप्राय हो सकता है ? उनका अर्थ है कि गुरुमुख से ज्ञान सुनने के बाद ही पुनर्जन्म होता है। सतगुरु को सुनने के बाद ही सब अपने आपको आत्मा अनुभव करते हैं और मुक्त हो जाते हैं। तब वे उसी समय मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र से स्वतंत्र हो जाते हैं।

39. मनुष्य 2 प्रतिशत शारीरिक है और 98 प्रतिशत मानसिक व अध्यात्मिक। किन्तु शारीरिकता ही हमारा अधिकतर समय व ध्यान ले लेती है। वास्तव में हमने भगवान् को भुला दिया है।

40. हे मां ! मुझे अपना बना ले और मेरे जीवन को दिव्य बना दे।

41. आत्मा में जन्मरहित मृत्युरहित तथा सदा के लिये अपरिवर्तनशील हो।

42. आत्म साक्षात्कार ही आत्मानुसंधान है।

43. हमारे जीवन की उपादेयता तभी है जब हम इससे दूसरों को वास्तविक विद्या का ज्ञान कराए, जिससे कि वे हमारे मिलने के पहले से अधिक आनंद से जीवन बिता सकें। हम अपना सत्प्रभाव व प्रेम उन तक भेजते हैं, जिससे कि वे हर क्षण प्रभु को याद करते हैं।

44. आध्यात्मिक चिकित्सा मनुष्य के हर भाग तक पहुंचती है।

45. यदि हमें इतना विश्वास हो कि हम अपने ज्ञान के प्रकाश से किसी रोगी मन व दुखी हृदय की मानसिक व

heart. The mental and spiritual healing that results will most assuredly heal the Physical also. Give Courage, Hope (Moral and Spiritual) Upliftment.

46. Be careful and you won't fall.

47. **Gyani** is happiest man though without a shirt.

48. A Faint heart never wins a Fair lady.

49. Either you are God or Dog.

50. Know thyself and you know God.You are already that.

51. One became many, projection of **Nirakar** God ; Mothers hair is her extension not mother.

52. Creation—Something coming out of nothing.

53. Having a Loving Heart—Have a conviction that we are loved.

54. Be good, then all will foresake you.

55. When knowledge dawns, world disappears.

56. Guru robs you of the Sense of Possession—Nothing is Mine.

57. 'Vedas' cannot show you God. You are already that. With knowledge, ignorance goes, then sin,

आध्यात्मिक चिकित्सा कर सकते हैं तो उससे उसकी शारीरिक चिकित्सा भी हो जायेगी। सदा उसको साहस, आशा दो और नैतिक तथा आध्यात्मिक रूप से उठाओ।

46. सावधान रहोगे तो गिर नहीं पाओगे।

47. ज्ञानी किसी परिग्रह के बिना भी परम आनन्द में रहता है।

48. दुर्बल इच्छा शक्ति वाला व्यक्ति कभी लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकता है।

49. या तो तुम भगवान् हो सकते हो अन्यथा तुम श्वान हो।

50. स्वयं को जानकर ही तुम परमात्मा को जान सकते हो। तुम वास्तव में भगवान् ही हो।

51. एक ही अनेक हो गया है। यह निराकार परमात्मा की प्रतिछवि है, किन्तु उसी प्रकार जैसे माँ के बाल माँ नहीं होते, माँ के होते हैं।

52. कृति जो शून्य से उत्पन्न होती है।

53. प्रेमी हृदय होने का अर्थ है हमें दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि हमें अनंत प्रेम प्राप्त है।

54. यदि तुम अच्छे बन जाओगे तो संसार तुम्हें ठुकरा देगा।

55. जब ज्ञान का उदय होता है, संसार दृष्टि से ओझल हो जाता है।

56. गुरु तुमसे अधिकार भावना को छीन लेता है; मेरा कुछ भी नहीं है।

57. वेद तुम्हें ईश्वर का दर्शन नहीं करा सकते। तुम पहले से ही भगवान् हो। ज्ञान से अज्ञान चला जाता है। सब पाप

then desire, selfishness, then all misery disappears. And you become free from delusions.

58. Live for others only.

59. Even the desire to know yourself becomes obstacle, in finding ownself i.e., Realisation.

60. It is difficult to be near God when you rise in the eyes of the world (Fame). The One without worldly support finds the support of God. When outwardly support falls off, God's support is gained.

61. To be prepared for war is one of the most effectual means of preserving peace.

62. Ask him, "Where is your God" and see that he knows nothing.

63. God may forgive but the nervous system never does. Who can recompense him for those 20 years lost in wilderness; the mental agony, the suffocating anxiety, the uncertainities and frustations, the cruel injustice of in all; by what measure and by what yardstick shall these be calculated.

64. Remember you have nothing to attain, you are already God. God is never lost, therefore do not search for him. Even good desire to find God is an obstacle in finding him.

इच्छा स्वार्थ और तब सब दुखों का पूर्णतया नाश हो जाता है। सब प्रकार के भ्रमों से छुटकारा हो जाता है।

58. सिर्फ दूसरों के लिए जीयो।

59. स्वयं को जानने की इच्छा भी अपनी प्राप्ति में बाधक बन जाती है।

60. जब तुम संसार की दृष्टि में उठते हो तो भगवान् के समीप होना बहुत कठिन है। निराधार होकर ही भगवान् का आधार पाया जाता है। जब और आश्रय समाप्त हो जाते हैं, तब प्रभु का आश्रय मिलता है।

61. युद्ध के लिये तैयार रहना शांति रखने का सबसे प्रभावशाली तरीका है।

62. किसी से पूछो कि तुम्हारा भगवान् कहां है और तुम पाओगे कि वह कुछ नहीं जानता।

63. भगवान् तो माफ भी कर दे, पर अपना मन कभी माफ नहीं करता। जो बीस वर्ष चले गए उन्हें कौन वापस करेगा ? उस समय का अकेलापन, मानसिक तनाव व कष्ट और जो ऊँच नीच सहनी पड़ी, जो परेशानियां हुई और जो अन्याय हुआ उसको किस आधार से नापा जा सकता है।

64. याद रखो, तुम्हें कुछ भी प्राप्त नहीं करना है, तुम पहले से ही भगवान हो। भगवान् कभी खोया नहीं था, इसलिये इसे ढूंढो भी मत। यहां तक कि भगवान् को पाने की इच्छा करना भी भगवत् प्राप्ति में बाधक है।

65. Man cannot become God as an ass cannot become horse, but man is already God. Know That **Mukti** is your eternal nature.

66. With knowledge of God, World disappears as darkness is dispelled by light. You have nothing to do.

67. What is gained by knowing **"Self"**. Gita says "By knowing which nothing remains to be known".

68. Love is a state of Self. It is not an action. Love is not done. It just happens. If there is slightest feeling that I love, the love is not real. Love becomes my nature.

69. Yoga is a state of mind. Wherein there is no **"Sankalpa"** or **"Vikalpa"**.

70. Adjust yourself to God's will. Everywhere it is My will that is being done.

71. If your horse is hungry, feed it but keep yourself above hunger. As you are **"Atma"**.

72. Have faith that you are brave, firm like a rock. Truth triumphs. Brave man dies but once. I hate cowardice.

65. मनुष्य भगवान् नहीं बन सकता जिस प्रकार कि गधा घोड़ा नहीं बन सकता, बल्कि मनुष्य पहले से ही भगवान् है, मुक्ति तुम्हारा स्वभाव है इसे जानो।

66. ईश्वर का ज्ञान होते ही संसार विलीन हो जाता है, जिस प्रकार प्रकाश होने से अंधकार विलीन हो जाता है। तुम्हें कुछ भी नहीं करना है।

67. आत्मज्ञान से क्या प्राप्त होता है ? गीता में कहा है आत्मज्ञान के पश्चात् कुछ भी जानने को शेष नहीं रहता है।

68. प्रेम आत्मा की दशा (स्वभाव) है। यह कोई कार्य नहीं है। प्रेम किया भी नहीं जा सकता पर हो जाता है। जहां जरा सा भी यह विचार होता है कि मैं प्रेम करता हूं, वहां वास्तविक प्रेम नहीं होता। प्रेम तो मेरा स्वभाव बन जाता है।

69. योग मन की वह दशा है जहां संकल्प विकल्प नहीं होता।

70. अपने को पूर्णतया ईश्वरेच्छा पर छोड़ दो। सभी जगह, सभी रूपों में मेरी ही इच्छा पूरी हो रही है, ऐसा समझो।

71. यदि तुम्हारा शरीर भूखा हो तो उसे खाना दो पर अपने को भूख से ऊपर समझो क्योंकि तुम आत्मा हो।

72. विश्वास रखो कि तुम वीर हो चट्टान की तरह दृढ़ हो। सत्य हमेशा विजयी होता है। मनुष्य केवल एक बार मरता है। मैं कायरता से घृणा करता हूं।

73. Have you got the will to surmount mountain's high obstructions, when whole world is against you with a sword in hand ? Would you still dare to do what you think is right ? If wife and children are against you, If all your money goes, your name dies, would you still stick to it ?—(Vivekananda)

74. It is good to have money and the things money can buy, but it is good too to check-up once a while and make sure that you haven't lost the things, money can't buy as God Bliss & Breath.

75. The Distinction between crime and justice is no greater. When a man wants is murder a tiger, he calls it sport. When the Tiger kills a man, he calls it ferocity.

76. Fight one more round. One who fights one more round is never whipped.

77. Be clean rather than clever.

78. The only difference between a saint and sinner is that every saint has a past and every sinner a future.

79. Time is more than money. Time lost can never be recovered.

73. (विवेकानंद)-क्या तुम्हारे पास बड़ी से बड़ी कठिनाई को भी पार करने का साहस है। यदि सारा संसार भी तुम्हारे विरुद्ध हो, तो भी जिस कार्य को तुम ठीक समझते हो, उसे करने का तुम में साहस है ? यदि तुम्हारी पत्नी, तुम्हारे बच्चे तुम्हारे विरुद्ध हों, यदि तुम्हारा सब धन भी चला जाये, यश भी चला जाये तब भी क्या तुम जिस कार्य को ठीक समझते हो करोगे ?

74. यह अच्छा है कि तुम धन व धन से प्राप्त होने वाली वस्तुएँ रखो, पर कभी-कभी अपनी इच्छाओं को रोकना और यह देखना भी अच्छा है कि कहीं तुमने उन वस्तुओं को खो तो नहीं दिया है जो बिना धन के मिलती हैं जैसे आनंद, भगवान् इत्यादि।

75. अपराध और अन्याय के बीच का अंतर कुछ भी नहीं। यह केवल सुविधा की बात है। जब एक मनुष्य शेर को मारता है तो उसे खेल कहते हैं और अगर एक शेर मनुष्य को मारे तो उसे निर्दयता कहते हैं।

76. निराश मत होओ, एक बार फिर प्रयत्न करो। जो सदैव प्रयत्नशील रहता है, वह जीवन में कभी मार नहीं खाता।

77. चालाक होने के स्थान पर पवित्र हो जाओ।

78. संत और पापी में केवल यही फर्क है कि संत का भूतकाल होता है और पापी का भविष्य।

79. समय धन से अधिक मूल्यवान है क्योंकि खोया धन तो मिल सकता है पर बीता समय हाथ नहीं आता।

80. Be the witness and do not react. Entirely forget yourself. You have no duty.

81. Self Confidence is Self realisation.

82. Never forget the obligations of your **"Satguru"**.

83. Give-up fault finding if you want peace of mind.

84. It is thy faith that heeled thee and not I.

85. It is a sin not to say "I am God". Do not play miser's part.

86. A glorious brilliant, future is awaiting you. See God everywhere.

87. A man had become so adapt in imitating the voice of a Bulbul, that he had forgotten the voice of man. The king said, "I have heard the bul-bul itself singing and I expect you to sing the songs for which you have been born. Life is not to imitate others.

88. Are your prayers also not based on fear. Whenever you fear, you remember God.

89. Service that claims reward is no service at all.

90. How could I renounce anything when I had nothing ?

80. सिर्फ साक्षी होकर रहो, कर्म मत करो, अपने को बिल्कुल भूल जाओ, तुम्हारा कोई फर्ज नहीं है।

81. आत्मविचार ही आत्म उपलब्धि है।

82. अपने सत्गुरु के उपकार हमेशा याद रखो।

83. यदि तुम मानसिक शांति चाहते हो तो दूसरों में दोष देखना बंद कर दो।

84. 'मैं नहीं' पर तुम्हारा विश्वास ही तुम्हारा उपचार करता है।

85. कंजूस मत बनो। अपने को भगवान् न समझना पाप है।

86. आगे सुनहरा भविष्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है, सब जगह भगवान् ही देखो।

87. एक मनुष्य ने बुलबुल की आवाज बोलने का इतना अभ्यास किया था कि वह अपनी आवाज ही भूल गया। इस पर राजा ने कहा कि मैंने खुद बुलबुल की ही आवाज को सुना है पर तुमसे तो मैं ये आशा करता हूं कि तुम स्वयं जिस जीवन के गीत गाने के लिये उत्पन्न हुए हो, वही गाओ। जीवन दूसरों की नक्ल करने के लिये नहीं बना है।

88. क्या तुम्हारी प्रार्थनाएं भय पर आधारित नहीं है, जब भी तुम डरते हो, भगवान् को याद करते हो।

89. ऐसी सेवा जो फल चाहती है, सेवा ही नहीं है।

90. जब मेरा कुछ भी नहीं है, तो मैं त्याग भी किसका कर सकता हूं ?

91. I want to change myself. If a man is a sinner, he puts on clothes of virtues, if violent then clothes of non-violence,if ignorant, clothes of knowledge. The ambition to be something in mind. I want to become a Saint. Can any woman with a man's clothes become a man. When there is a desire to be anything this is an escape from "**Self**"

92. Peace can be found only in Renunciation.

93. Desire in your minds puts on new bodies and pride finds new homes.

94. Freedom from Mind is Peace.

95. Desire to be something is mind. The race for being something is mind. The thirst for being something is mind.

96. Desire is for the future. Knowledge is for present.

97. In knowing the mind, mind disappears. Arrival of knowledge becomes farewell to desires. It is freedom from mind itself.

98. "God himself created himself"—(Guru Arjun Dev)

99. Everything is God.

100. One God extended himself everywhere in various ways.

101. God is the seed, God is the tree.

91. मैं स्वयं को बदलना चाहता हूं। यदि एक मनुष्य पापी है तो वही पुण्य के वस्त्र पहनना चाहता है, अज्ञानी है तो ज्ञान के वस्त्र चाहता है, यदि हिंसक है तो अहिंसक के वस्त्र चाहता है। हमेशा कुछ बनने की चाह व्यक्ति में है। मैं संत बनना चाहता हूं, इसलिये संत के वस्त्र चाहता हूं। पर क्या पुरुष के कपड़े पहनने मात्र से कोई स्त्री पुरुष हो सकती है। कुछ होने की इच्छा मात्र ही आत्मा से हमारी दूरी बढ़ाती है।

92. मात्र त्याग में ही शांति निहित है।

93. इच्छा ही नए शरीर धारण करवाती है और अभिमान ही नए घर खोज लेता है।

94. विचारों से छुटकारे में ही शांति है।

95. कुछ बनने की इच्छा ही मन है कुछ होने की दौड़ ही मन है, कुछ बनने की प्यास ही मन है।

96. इच्छा भविष्य की होती है और ज्ञान वर्तमान में ही होता है।

97. विचारों को जानने से विचार खो जाते हैं। ज्ञान का आगमन इच्छाओं को विदा कर देता है। इस प्रकार मन से मुक्ति मिल जाती है।

98. (गुरु अर्जुन देव) भगवान् ने स्वयं ही अपना सृजन किया।

99. सर्व में भगवान है।

100. भगवान् ने स्वयं ही अपना विस्तार अनेक प्रकार में किया है।

101. भगवान् ही बीज है, भगवान् ही वृक्ष है।

102. To serve his disciples is the best way to serve God.

103. Only **'Satguru'** can open to us the door of Self Realisation. The blind seek not the Guru, who dispels ignorance. The blind are after the Guru who deepens ignorance. If one blind leads the blind to ignorance, shall not the blind and blind follower both fall in the ditch.

104. The best prayer is healing of a broken heart.

105. An illu-ion caused by ignorance is removed by Self-inquiry.

106. Troubles won't come if you invite them not.

107. Civilisation owes its growth to a handful of individuals, who rising above the temptations of a cosy, comfortable routine living change to undergo trials and suffer problems to lead humanity to Nobler Goal.

108. Feel your children, relatives and friends as co-travellers in the journey of life and nothing more. So that if calamities befall, it will have no effect on the individual.

109. Do not gather treasure, for where your treasure is, there will be your heart also. You can't serve God and man.

102. भक्तों की सेवा ही भगवान् की सर्वोत्तम सेवा है।

103. केवल सत्गुरु ही आत्मज्ञान के द्वार खोल सकता है। परन्तु अज्ञानी लोग अज्ञानी गुरु के पीछे चलते हैं जिससे कि उनका अज्ञान और गहरा हो जाता है। क्योंकि एक अंधा दूसरे अंधे का हाथ पकड़ कर चलेगा तो क्या दोनों अंधे ही खड्डे में नहीं गिर जायेंगे ?

104. दुःखी दिल को संवारना ही सर्वोत्तम प्रार्थना है।

105. आत्म विचार से ही अज्ञान का भ्रम दूर होता है।

106. यदि तुम परेशानियों को स्वयं निमंत्रण न दो तो वो नहीं आयेंगी।

107. सभ्यता का श्रेय उन चुने हुए थोड़े से व्यक्तियों को जाता है जिन्होंने केवल अपने ही जीवन को सुखी बनाने की क्षुद्र इच्छाओं से ऊपर उठकर मानवता के ऊंचे आदर्शों की प्राप्ति के लिये अनेकों कष्ट उठायें हैं।

108. अपने बच्चों, रिश्तेदारों और मित्रों को अपने जीवन के सफर का केवल साथी ही समझो, उससे अधिक नहीं, जिससे कि यदि कोई दुर्घटनाएं भी घटें तो तुम्हारे मन पर उनका कोई प्रभाव न हो।

109. खजाना इकट्ठा मत करो क्योंकि जहां तुम्हारी पूंजी होगी, वहीं तुम्हारा मन भी होगा। तुम भगवान् व मनुष्य दोनों की सेवा नहीं कर सकते।

110. Worldly richness is polished poverty.

111. Property itself is a burden which take us to unending worries, fears and cares which choke the spirit of God in us.

112. Real wealth is that which increases with Distribution.

113. The pursuit of power or money is just a form of suicide.

114. Wealth and power keeps you prisoners. The service of love makes you free.

115. You cannot buy bliss by money.

116. It is difficult for man laden with riches to climb the steep path that leadeth to Bliss (Mohammed).

117. One moment of company with the 'Holy' makes a ship to cross the ocean of life.

118. Your will is important. I want to change your death into immortality.

119. We have not to renounce anything. But ignorance and install God everywhere. Enjoy therefore the things of life as God renouncing false views and false values.

120. A cigarette is a perfect type of pleasure.It leaves one dis-satisfied what more one wants.

110. सांसारिक अमीरी केवल चमकीली गरीबी है।

111. सम्पत्ति स्वयं में एक बोझ है जो हमें अन्तहीन चिन्ताओं, भय और देखभाल से बांध देती है जिससे कि भगवत भावना का गला घुट जाता है।

112. वास्तविक धन वही है जो बांटने से बढ़ता है।

113. शक्ति और धन के पीछे भागना एक प्रकार की आत्महत्या ही है।

114. धन और शक्ति तुम्हें बन्दी बना देते हैं जबकि निष्काम प्रेम तुम्हें स्वतंत्र बनाता है।

115. तुम धन से आनंद नहीं खरीद कर सकते ।

116. (मोहम्मद)–धन से लदे व्यक्ति के लिये आनंद की ऊंची चढ़ाई चढ़ना बहुत कठिन हो जाता है।

117. सत्संग की बड़ी महिमा है। संतों के साथ बिताया एक क्षण भी जीवन नैया को तारने में समर्थ होता है।

118. मैं तुम्हें मृत्यु से अमृत्व की ओर ले जाना चाहता हूं। इसमें तुम्हारी इच्छा आवश्यक है।

119. हमें किसी वस्तु का त्याग नहीं करना है सिर्फ अज्ञान का त्याग करना है और सर्वत्र ईश्वर को स्थापित करना है। जीवन में सब वस्तुओं को भगवान् ही जानो, अज्ञान की दृष्टि छोड़ दो।

120. सांसारिक इच्छाएं सिगरेट के समान है जो पीए जाने पर भी आदमी को अतृप्त ही छोड़ती है।

121. Everybody who is incapable of learning has taken to teaching.

122. No ascent without descent .

123. Be not depressed but pluck hope and strength out of the very heart of defeat, persecution and pain.

124. Renounce-Prominence, Power and Position.

125. In the rough voyage of life, light houses are needed.

126. Silence and sacrificial men is what India needs today.

127. Want makes us beggars.

128. When God sends rain, I feel it as my choice. Accept life, not rebel against it. When you accept life, Life accepts you. Allow your nature to carry out the will of the High Power.

129. Any attempt to suppress desire is a desire itself.

130. Knowledge means farewell to desires.

131. You cannot buy Bliss. Goal of life is peace of mind, and not money, as fish finds its life in water and not in honey.

132. Know Thyself and you know God.

121. जो व्यक्ति सीखने के अयोग्य हो जाता है, वह सिखाने लग जाता है।

122. बिना उतराई के चढ़ाई नहीं होगी।

123. उदास मत होओ, दुख परेशानियों और हार के समय आशा और शक्ति से काम लो।

124. प्रभुत्व, पद एक प्रतिष्ठा से ऊपर उठो।

125. जीवन की उबड़-खाबड़ यात्रा में दीप स्तम्भों की आवश्यकता है।

126. भारत को आज मौन और त्याग में रहने वाले मनुष्यों की आवश्यकता है।

127. इच्छा हमें भिखारी बनाती है।

128. जब भगवान् वर्षा करता है तो मैं कहता हूं कि यह मेरी ही इच्छा थी जैसा भी जीवन तुम्हारे सन्मुख आए उसे वैसे ही स्वीकार करो। उससे विद्रोह मत करो, जब तुम जीवन को स्वीकार करते हो तो जीवन तुम्हें स्वीकार करता है। ईश्वरीय इच्छा को अपने द्वारा पूरी करने का प्रयत्न करो।

129. इच्छाओं को दबाने की इच्छा करना भी स्वयं में एक इच्छा है।

130. ज्ञान का अर्थ इच्छाओं का विदा हो जाना है।

131. तुम आनंद को खरीद नहीं सकते। जीवन का उद्देश्य मानसिक शांति है, धन नहीं। जिस प्रकार मछली को पानी से जीवन मिलता है, शहद से नहीं।

132. अपने को जानो तो भगवान् को जान जाओगे।

133. Be Still and you will know That you are That.

134. Man is born of sex union. He can be born again of God Union.

135. When knowledge dawns, world disappears.

136. In the beginning was word. Word transplanted into the world, Lord hidden in it. Lord, world and Word. Thus one became many by **"Sankalpa"** i.e., **"Nirakar"** became **"Sakar"**.

137. Nothing is created. Infact there is no creation. The universe is the projection of God—His expansion, Extension, Annexure of God. All the world is nothing but your thought, your imagination and your ideas.

138. Man in his ignorance imagines that by searching outside of himself he will discover the truth.

139. All is right that seems most wrong.

140. Know that all creatures are propelled to action by God's will. Just as a doll of wood or artificial deer dances at the will of the rope-puller.

141. God creates beings through beings and destroys them at each other's hand. Not knowing this, **'Jeeva'** considers itself as a Doer of things.

133. शांत हो जाओ तो तुम पाओगे कि तुम स्वयं ही भगवान् हो।

134. मनुष्य का जन्म माता-पिता से हुआ है और उसका पुनर्जन्म ईश्वर के संयोग से होता है।

135. जब ज्ञानोदय होता है, संसार विलीन हो जाता है।

136. प्रारम्भ में केवल एक शब्द था (ओम्)। वही ओम् संसार में परिवर्तित हो गया और परमात्मा उसी में छिप गया। वही अपने संकल्प द्वारा एक से अनेक हो गया।

137. कुछ भी रचा नहीं गया है, कोई रचना भी नहीं है, यह संसार ईश्वर का ही विस्तार है। सारा संसार केवल तुम्हारा विचार है, केवल तुम्हारी कल्पना है।

138. अज्ञान में मनुष्य सोचता है वह अपने से बाहर ही ईश्वर को, सत्य को खोज लेगा।

139. जो भी प्राय: हमें गलत दिखाई देता है ठीक होता है।

140. सब जीव ईश्वरेच्छा द्वारा ही कार्य करते हैं; जैसे लकड़ी की पुतली और हिरन कठपुतली चलाने वाले की डोरी से नाचते हैं।

141. ईश्वर ने ही जीवों को जीवों द्वारा उत्पन्न किया है, ऐसे ही वह एक दूसरे से एक दूसरे का संहार भी कराता है; पर अज्ञान में जीव ऐसा न जान कर स्वयं को ही कर्त्ता मानता है।

142. One thing that you must fear most is fear itself. So that you may never fear.

143. First deserve, then desire. Only deserve, don't desire.

144. How can you be happy and healthy when you are thinking of sickness all the time

145. Only bring in Light. Don't fight darkness. Only be good, you will be lovesome. All will give up. Bring in Light and Darkness gives you up.

146. Remain Natural Remain "**Ashoka**" Sri Krishna said, "If you are disturbed" You are not Natural. To remain sad is not your nature. Thinking is not your real nature. Actually there is no joy or grief but your thought portrays you as such.

147. It is mind that makes Heaven or Hell.

148. Control of Desire alone leads to Self Realisation.

149. At the cost of death, you become Immortal.

150. If a wrong man uses right means, the right means work in the wrong way.

151. Love for Money is the root of all evil.

152. Open your window to allow sun to come in. Make the best use of everything.

142. तुम्हें स्वयं डर से ही डरना चाहिये जिससे कि तुम सदा के लिये निर्भय हो सको।

143. पहले योग्य बनो, फिर इच्छा करो। केवल योग्य बनो, इच्छा मत करो।

144. जब तुम हर समय बीमारी का विचार करोगे तो स्वस्थ कैसे हो सकते हो ?

145. अंधेरे से लड़ो मत केवल प्रकाश करो। केवल अच्छे बन जाओ सब स्वयं तुम्हें छोड़ देंगे; जैसे प्रकाश के आने पर अंधेरा स्वयं चला जाता है।

146. ''स्वभाव'' में रहो। भगवान् कृष्ण ने कहा है 'अशोक' रहो। यदि तुम विचलित हो तो तुम स्वभाव में नहीं हो। दुखी रहना स्वभाव नहीं है, सोचना भी तुम्हारा असली स्वभाव नहीं है। वास्तव में कुछ भी आनन्द और दुख नहीं है, केवल तुम्हारा विचार ही उन्हें वैसा बनाता है।

147. मन ही स्वर्ग और नर्क की रचना करता है।

148. इच्छाओं के नियंत्रण से ही आत्म साक्षात्कार सम्भव है।

149. मर कर ही तुम अमरता प्राप्त कर सकते हो।

150. यदि कोई गलत व्यक्ति ठीक साधनों का भी उपयोग करता है तो वो गलत तरीके से ही काम करते हैं।

151. धन का प्रेम ही सब बुराइयों की जड़ है।

152. अपनी खिड़कियां खोलो जिनसे सूर्य का प्रकाश अंदर आ सके। हर वस्तु का सर्वोत्तम उपयोग करना सीखो।

153. Get rid of your Body Consciousness and you get rid of all your sufferings.

154. Your Determination is important.

155. Be Silent and rule the world.

156. Failures are the pillars of success.

157. I may Die so that you may Live.

158. **Mukti**, Salvation is your eternal nature, you have not to attain it. You are that already. As the nature of water is cold, of fish is to swim, of bird is to fly. There is nothing for you, that you desire. You are free from duality. You are in the immortal state, fearless, invisible. You are the truth. Highest effort is salvation.

159. The energy we waste in Judging others is just what is needed, to make us to live up to our own ideals.

160. Live Rich, Die Poor.

161. Forget yourself to realise yourself. He who loseth life shall find life.

162. Subtract yourself from all your relationship. You are neither son, father, husband or wife.

163. God made man into his own Image, Reflection, Lightness.

153. देहाभिमान से छुटकारा पाते ही तुम्हारे सब दुख छूट जायेंगे।

154. तुम्हारा निश्चय ही महत्वपूर्ण है।

155. मौन हो जाओ और संसार पर शासन करो।

156. असफलताएं ही सफलताओं का आधार स्तम्भ है।

157. चाहे मैं मर भी जाऊं पर तुम लोग जीवन प्राप्त करो।

158. मुक्ति, मोक्ष तुम्हारा आदि स्वभाव है। इसे तुम्हें प्राप्त नहीं करना है-तुम तो वो पहले से ही हो। जिस प्रकार पानी का स्वभाव ठण्डा होता है, मछली का पानी में रहना, पक्षियों का उड़ना है, ऐसे ही मुक्ति भी तुम्हारा स्वभाव है। कोई वस्तु ऐसी नहीं जिसकी तुम इच्छा करो, तुम द्वैत से स्वतंत्र हो। तुम अविनाशी हो, निर्भय हो, अदृष्ट हो, तुम सत्य हो। मुक्ति पाने का प्रयत्न करना ही सबसे बड़ा पुरुषार्थ है।

159. जिस शक्ति का अपव्यय हम दूसरों को जज करने में करते हैं उसी का उपयोग हम अपने आदर्शों को जीने में कर सकते हैं।

160. राजाओं की भांति जियो और गरीब होकर मरो।

161. अपने स्वरूप को प्राप्त करने के लिये अपने देहाभिमान को भुला दो। जो जीवन देता है उसे ही जीवन मिलता है।

162. अपने को सब रिश्तों से खींच लो-तुम न पिता हो, न पुत्र, न पति, न पत्नी।

163. भगवान् ने मनुष्य को अपनी ही प्रतिछवि तथा अपनी ही प्रतिछाया बनाया है।

164. India's Atmic Balm is the remedy for Atomic Bomb.

165. One who becomes free from worries by being empty attains perfection.

166. When there is great attachment to God, then the result is non-attachment for all the things that are not God.

167. Why destroy present happiness by a distant misery, which may never come at all.

168. If your thought cannot make you miserable, then even God cannot. God may forgive, but your nervous system never does.

169. Money cannot make a man. Money can at most spoil a man.

170. Stop thinking. Enjoy nature by walking alone with God. Then you lose your cares and worries, become carefree and careless.

171. My happiness depends on the way I meet events in my life ; not on the events.

172. Never wish to change the things that cannot be changed. What can't be cured must be endured.

164. भारत का आत्मिक बाम ही एटामिक बम का सर्वोत्तम उपचार है।

165. जो खाली होकर चिन्ताओं से रहित हो जाता है वह पूर्ण हो जाता है।

166. जब ईश्वर से अत्यन्त प्रेम हो जाता है, उसके फलस्वरूप सांसारिक वस्तुओं से वैराग्य हो जाता है।

167. वर्तमान आनंद को भविष्य में आने वाले दुख की आशंका से क्यों नष्ट करते हो ? हो सकता है वो दुःख कभी आये ही नहीं।

168. यदि तुम्हारा विचार तुम्हें दुखी नहीं करता है तो भगवान् में भी तुम्हें दुखी करने की शक्ति नहीं। ईश्वर भी तुम्हें क्षमा कर सकता है पर तुम्हारा स्नायुमंडल नहीं।

169. धन से आदमी नहीं बनता है। धन उसे बिगाड़ जरूर सकता है।

170. सोचना बंद करो। केवल भगवान् के साथ घूम कर प्रकृति का आनंद लो। तब तुम्हारी सारी चिन्ताएं परेशानियां खत्म हो जायेंगी और तुम निश्चिंत हो जाओगे।

171. मेरा आनंद परिस्थितियों पर आधारित नहीं है वरन् मैं किस भांति परिस्थिति का मुकाबला करता हूं, इस पर आधारित है।

172. जो कुछ बदला नहीं जा सकता उसे बदलने का प्रयत्न मत करो। जिसको नहीं बदल सकते उसको सहन करो।

173. Worry is a rocking chair, that never takes me anywhere.

174. Every soul in your own soul. Every creature in yourself. If you help someone you help yourself.

175. Your birthday should remind you of your death day.

176. Don't think with your mind, surrender unto God.

177. You never try to avoid what God sends.

178. Fear is the sign of want to faith in God.

179. Strength is life. Weakness is death. (Vivekananda)

180. Difficulties and trouble will help you in developing your will and power of endurance. Be Courageous.

181. Even Prophets become perfect through sufferings.

182. The ultimate end and aim of all methods, means and ways of Self-realisation is to make man see. Sameness in all, at all times, everywhere and in all conditions. In other words to realise God in all and all in God.

183. As you think, so shall you become.

184. Faith is powerful than fear.

185. When **Chela** is Ready, **Guru** is there.

173. चिंता घूमने वाली कुर्सी के समान हैं जिसका गंतव्य कुछ भी नहीं है।

174. हर आत्मा तुम्हारी आत्मा है। हर जीव तुम्हारा अपना स्वरूप है, अगर तुम किसी की सहायता करते हो तो अपनी सहायता करते हो।

175. अपने जन्म दिवस पर तुम्हें मृत्यु दिवस याद आना चाहिये।

176. मस्तिष्क से मत सोचो, वरन् भगवान् के शरणागत हो जाओ।

177. जो भी भगवान् भेजे उसे अस्वीकार न करो।

178. डरना भगवान् में विश्वास न होने का चिन्ह है।

179. शक्ति ही जीवन और दुर्बलता ही मृत्यु है। (विवेकानन्द)

180. कठिनाइयां और मुसीबतें तुम्हारी इच्छाशक्ति और सहनशक्ति को बढ़ाऐंगी। साहसी बनो।

181. अवतार भी कष्टों द्वारा ही पूर्ण बनते हैं।

182. आत्मज्ञान के सब साधनों सब तरीकों और सब रास्तों का अर्थ मनुष्य को सबमें सर्वदा समभाव देखना बताना है। दूसरे शब्दों में सबको भगवान् कर जानना और सबमें भगवान् को जानना है।

183. जैसा तुम सोचते हो वैसे ही बन जाते हो।

184. विश्वास भय से अधिक शक्तिशाली है।

185. जब शिष्य तैयार होता है तो गुरु भी आ जाता है।

186. Pray not, rather Act.

187. It is easy to strike the blow, but hard to stay the hand.

188. Meditation and not thinking is the proper course, Meditation means absence of action. It is not an act, rather a state of mind. Meditation attains perfection when it is no longer necessary to meditate again. Meditation is a state where thought is not.

189. Never try to think without a peaceful mind.

190. Practise of seeing God in all confers on the **"Sadhaka"** immediate experience of bliss.

191. I do not want followers because if you follow; You lose truth.

192. Truth is Pathless Land.

193. If you go to a surgeon for operation, he will operate and cause you pain also, yet it is his kindness. If I speak strong words, It does not prove that I have no affection for you.

194. Action cannot destroy ignorance only **Gyan** can destroy ignorance.

195. It is the mind that makes hell of Heaven. Thought is responsible for the whole mischief.

186. प्रार्थना नहीं कर्म करो।

187. प्रतिशोध लेना आसान है, संयम रखना कठिन।

188. सोचना नहीं, ध्यान करना ही उचित रास्ता है। ध्यान का अर्थ है क्रिया का अभाव। यह कोई कर्म नहीं है वरन् मन की एक दशा है। जब फिर ध्यान करने की आवश्यकता न रह जाये वही स्थिति वास्तविक ध्यान है, ध्यान में विचार नहीं होते।

189. अशांत मन से विचार मत करो।

190. सबमें भगवान् देखने की प्रक्रिया से साधक को तत्काल ही आनंद का अनुभव होता है।

191. मुझे अनुगामी नहीं चाहिये क्योंकि यदि पीछे चलोगे तो सत्य को छोड़ दोगे।

192. सत्य का कोई मार्ग नहीं है।

193. यदि तुम एक सर्जन के पास ऑपरेशन कराने जाओ तो वह ऑपरेशन करेगा, उसमें तुम्हें दर्द होगा, पर इसमें भी डाक्टर की तुम पर कृपा ही है। इसी प्रकार यदि मैं कुछ कटु शब्द बोल भी देता हूं तो इसका अर्थ यह नहीं है कि मेरे दिल में तुम्हारे लिये प्रेम नहीं है।

194. कर्म से अज्ञान का नाश नहीं होगा ; केवल ज्ञान ही अज्ञान के नाश में समर्थ है।

195. मन ही स्वर्ग को नरक बना डालता है, विचार ही सब मुसीबत की जड़ है।

196. He who is on the real path is sure to realise the object.

197. Give to the world, the best that you have, and the best will come back to you.

198. Wants makes us Beggars.

199. Everyday is a holiday and every night is a Golden night.

200. Speak only when you are heard with heart.

201. Pardon me not O Lord ! But punish me for every Fault.

202. Unless you feel all, you know not all.

203. Don't speak unless you have digested, lest you vomit all you have eaten.

204. I am able to love God, because he gives me freedom to deny him. God loves to see in me not his servant but himself who serves all.

205. Think all you speak, but speak not all you think.

196. जो वास्तविक पथ पर है, वह अपना उद्देश्य अवश्य प्राप्त करेगा।

197. जो उत्तम वस्तु तुम्हारे पास हो वही संसार को दें, इस प्रकार उत्तमोत्तम वस्तु ही तुम्हारे पास वापस आयेगी।

198. इच्छा हमें भिखारी बनाती है।

199. हर दिन अवकाश का दिन है और हर रात सुनहरी रात।

200. जब लोग तुम्हें दिल से सुनें तभी बोलो।

201. हे प्रभु ! मुझे क्षमा न करना वरन् मेरे हर कसूर की सजा देना।

202. तुम तब तक सर्व नहीं जान सकते जब तक सर्व में अपने को महसूस नहीं करते।

203. जब तक तुमने अच्छी तरह पचा नहीं लिया तब तक मत बोलो, नहीं तो जो खाया है अनपचा ही निकल जायेगा।

204. मैं प्रभु से इसलिये प्रेम कर सका हूं क्योंकि उसने मुझे अपने को भी अस्वीकार करने की स्वतंत्रता दी है। भगवान् मेरे रूप में कोई चाकर देखना नहीं पसंद करता वरन् स्वयं को देखा चाहता हूं जिससे कि सबकी सेवा होती हो।

205. जो कुछ भी तुम बोलो वह सब सोच कर बोलो पर जो कुछ भी तुम सोचते हो वह सब मत बोलो। अर्थात् वाणी और विचारों पर नियंत्रण रखो।

206. Be not afraid of anything. It is fear that is the great cause of misery in the world. It is fear that is greatest superstition. It is the fear that is the cause of woes and it is fearlessness that brings heaven in a moment.

207. A person who gives unasked advice needs an advice himself.

208. God gave man free will, so that he may choose Him above all, but a free choice involves the possibility of wrong choice. Man chooses 'Ego' instead of his real Self i.e., God.

209. Instead of changing the World one should change oneself. If the mind is changed, the man is changed ; If the man is changed, the world is changed.

210. Not knowing that bee is moved by the wheel, the Fly thinks that she is moving the wheel.

211. Our source of happiness is within. Our ignorance makes us search without in vains.

212. The Man thinks that he is killing the time, not realising that the time is killing him.

213. Do your best but to God leave the Rest.

214. What could you renounce when you have nothing.

215. Giving up the false Self (Ego) is true Renunciation.

206. किसी भी वस्तु से मत डरो। वास्तव में डर ही संसार में अधिकतर दुखों की जड़ है। डर ही सबसे बड़ा अंध विश्वास है। डर से सब प्रकार के दुःख उत्पन्न होते हैं और निडरता से स्वर्ग का आनंद मिलता है।

207. जो मनुष्य बिना मांगे सम्मति देता है उसे स्वयं सम्मति की आवश्यकता है।

208. प्रभु ने मनुष्य को free will दी है, जिससे कि वह भगवान् को चुन सके परन्तु इसका दुरुपयोग भी कर सकता है। कई दफा मनुष्य भगवान् की जगह अहंकार को चुन लेता है।

209. संसार को परिवर्तन करने के स्थान पर स्वयं को बदलो। यदि मन बदल जाता है तो मनुष्य बदल जाता है और मनुष्य बदल गया तो संसार बदल गया।

210. मक्खी को पता नहीं है कि वह पहिये के कारण चल रही है, वह समझता है कि पहिया उसके कारण चल रहा है।

211. हमारे आनन्द का स्रोत अंदर है। पर हम अज्ञान के कारण उसे बाहर ढूंढते हैं और हमें असफलता मिलती है।

212. मनुष्य समझता है कि वह समय को नष्ट कर रहा है, पर यह नहीं समझता कि समय ही उसे नष्ट कर रहा है।

213. अपना भरसक प्रयत्न करो, बाकी सब भगवान् पर छोड़ दो।

214. तुम क्या छोड़ सकते हो जबकि तुम्हारा कुछ है ही नहीं।

215. अपने अहंकार का त्याग ही वास्तविक त्याग है।

216. Unless one renounces everything, he cannot be my disciple.

217. Love is state of **Atma** not an action.

218. **Samadhi** is the state of thoughtlessness.

219. Thinking is not your nature. What is allotted cannot be blotted. You can't change conditions.

220. Soul has no Sex. It is neither female nor male. It is only in body that sex exists.

221. Man is already God, but he has forgotten it. He is reminded by Guru, He gets awakened, "I am that" He says. He then forgets body.

222. The enjoyment of pleasure and pain is determined by your past karmas. But now do your own "**Purushartha**".

223. Even animals sleep, beget and die away but man has a mission beyond this way. I want to change your death into immortality. Listen through mind, hear with heart and determine completely once for all. This Revolution occurs in minutes, otherwise even five births are not enough.

224. God realised man acts without actions, speaks without words, and achieves without efforts.

216. जब तक कोई सर्व का त्याग नहीं कर देता, मेरा शिष्य नहीं हो सकता।

217. प्रेम आत्मा की दशा है, कोई क्रिया नहीं।

218. समाधि निर्विचार अवस्था है।

219. सोचना तुम्हारा स्वभाव नहीं है। जो कुछ प्रारब्ध में है वह अवश्य ही होगा; तुम परिस्थितियों को नहीं बदल सकते।

220. आत्मा का कोई लिंग नहीं है। न ही स्त्रीलिंग और न पुलिंग। ये सिर्फ शरीर में है।

221. मनुष्य पहले से ही भगवान् है परन्तु वह इसे भूल गया है। गुरु उसे याद दिलाता है। वह जागता है और कहता है कि "मैं यहाँ हूं" और तब वह शरीर को भूल जाता है।

222. तुम्हारे भूतकालीन कर्मों से ही तुम्हारे सुख-दुख का निर्माण होता है, पर अब तुम अपना पुरुषार्थ करो।

223. पशु भी सोते, पैदा करते और मरते हैं। परन्तु मनुष्य का लक्ष्य इससे बढ़ कर है। मैं तुम्हारी मृत्यु को अमरत्व में बदलना चाहता हूँ। मन लगा कर दिल से सुनो और निश्चित रूप से हमेशा के लिये जान लो। यह वृत्ति कुछ ही क्षणों में हो जाती है, वर्ना पांच जन्म भी उसके लिये पर्याप्त नहीं हैं।

224. प्रभु को जाने हुए व्यक्ति से बिना क्रिया के कर्म होता है, वह बिना शब्दों के बोलता है और बिना किसी प्रयत्न के प्राप्त करता है।

225. **Brahma Vidya** is caught not taught.

226. Give up the sense of doer. **Karma** will go on automatically.

227. Adjust yourself to God's will.

228. You are to awaken God in the heart of men.

229. How can the knowledge of one who does not know himself be complete of final.

230. Be like a Daisy flower as it turns towards Sun.

231. We have to be at all times in quest.

232. Live in world like a boat in the water.

233. Forget yourself to realise reality.

234. Scriptures are limitless, **Vedas** are extensive. It will take long years to study all of them. Your life is short. Approach a realised Guru, take from him the essence of all scriptures. A short word from him will do to guide you. Take refuge in that word. Take the essence and avoid unnecessary details and go to Realisation. Find yourself, differentiate yourself from your body which is just your covering. Take refuge in the pure consciousness then you can enjoy peace, freedom from all

225. ब्रह्म विद्या पकड़ी जा सकती है, सिखाई नहीं जा सकती।

226. कर्ताभाव छोड़ दो, कर्म स्वयं होता रहेगा।

227. अपने को भगवान् की इच्छा पर छोड़ दो।

228. तुम्हें हर व्यक्ति के दिल में प्रभु को जगाना है।

229. जो स्वयं को नहीं जानता उसका ज्ञान भी पूर्ण और अंतिम कैसे हो सकता है।

230. सूर्यमुखी पुष्प के समान हो जाओ जो केवल सूर्य की ओर ही मुख रखता है।

231. हम में हर समय सत्य की प्यास जागृत रहनी चाहिये।

232. संसार में ऐसे रहो जैसे सागर में नाव।

233. सत्य को पाने के लिये अपने को भूल जाओ।

234. शास्त्र अनंत हैं, वेद भी बहुत बड़े हैं, वह सब पढ़ने में तुम्हें बहुत समय लग जायेगा और तुम्हारा जीवन बहुत थोड़ा है। इसलिये किसी ब्रह्मज्ञानी गुरु के पास जाओ और उससे सब शास्त्रों का सार ले लो। उनसे मिला हुआ एक छोटा शब्द ही तुम्हारा निर्देश करेगा। उसी शब्द की शरण ग्रहण करो, सिर्फ तत्व ग्रहण करो, बाकी व्यर्थ की बात छोड़ दो और आत्मज्ञान को प्राप्त कर लो। अपने को पा लो, शरीर में अपने को असंग कर लो क्योंकि वह तो केवल तुम्हारा आवरण है। शुद्ध आवरण की शरण लो,

bondage. Wealth, luxury, enjoyments, royal Flavours—all are good for nothing, if you do not realise the Self that you are.

235. There is no escape from fate. Your tricks will land you where the fate wanted you.

236. Apparently a bird is dependant upon twig, yet in reality he has wings. Similarly **Vedanti** may appear to possess things like ordinary men, yet they are above desires.

237. Faith is powerful than fear.

238. All sins and sufferings have but one source: man denial of his own destiny. Declare it in thy life and conquer death. Die to the body, Die to the mind, this double death will conquer death.

239. **Brahma** cannot be realised with the help of intellect, discourses and hearing much, so we must be silent. **Brahma** can best be expressed through silence. Silence is the mother of real peace and bliss. 'In stillness which is the rest of the Soul from Earthly encounter insight is born and man becomes what he is.

240. I was hidden treasure and I loved to be known. Therefore I created the creation in order to be known.

तभी तुम शांति और बंधन से स्वतंत्रता का आनंद उठा सकोगे। धन, वैभव, सांसारिक सुख तथा राज्य लाभ सब व्यर्थ है-यदि तुमने अपने स्वयं को नहीं जाना है।

235. भाग्य से कोई नहीं बच सकता। तुम्हारी सारी अक्लमंदी तुम्हें वहां पहुंचा देती है। भाग्य जहां तुम्हें पहुंचाना चाहता है।

236. देखने में तो आता है कि पक्षी पेड़ की डाल पर बैठा है, पर वास्तव में उसे अपने पंखों का आधार है, पेड़ की डाल का नहीं। इसी भांति वेदांती प्रारब्ध रूपी पदार्थों के बीच रहता हुआ भी अपने ज्ञान के आधार पर ही रहता है।

237. विश्वास भय से अधिक शक्तिशाली है।

238. सब पापों और दुखों का आधार मन है। अपने भाग्य से मुकर जाओ। अपने जीवन में यह उद्घोषित कर दो और मृत्यु पर विजय प्राप्त करो। शरीर और मन की मृत्यु करके मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लो।

239. ब्रह्म को बुद्धि प्रवचनों और अधिक सुनने से ही नहीं पाया जा सकता। इसलिए हमें शान्त होना चाहिये। ब्रह्म मौन में ही प्रकट होता है। मौन ही वास्तविक आनन्द और शांति की मां है। मौन में ही आत्मा निवास करती है और मौन से ही अन्तर्दृष्टि होती है जिससे मनुष्य जो स्वयं वह है वह प्रकट होता है।

240. मैं छुपे हुए खजाने की भांति था और मैं चाहता था कि सब मुझे जानें। उसी से मैंने सृष्टि का सृजन किया।

Maharishi Raman's Points

1. Surrender Once and for all to **Satguru** and be done with desires. So long as the sense of doership is retained there is desire and there is also personality. If this goes, the Self is found to shine forth pure. Sense of doership is the bondage and not the actions themselves.

2. Be still and know that I am God.

3. Education and **Shastra Gyan** is learned ignorance. Illiteracy is ignorance. Both of them are ignorant of their true aim. Whereas a sage (sant) is not ignorant because there is no aim for him, he being already in a realised always. Even a learned man must bow before the illiterate sage (sant).

4. Master ultimately is within. Meditation is meant for the removal of ignorance, of the wrong idea that he is without.

5. 'Knowing the Self'—means "Being the Self", "I am that I am" sums up the whole truth and the method is summed up in "Be still", Stillness means "destroy yourself" i.e., destroy the notion "I am so and so".

6. **Gyan** is realisation of truth. It is possible by meditation as it helps you to hold on the truth to the exclusion of all other thoughts.

महर्षि रमन के अनमोल वचन

1. सद्गुरु को सम्पूर्ण समर्पण करके इच्छाओं से निवृत्त हो जाओ। जब तक कर्त्ताभाव रहता है तब तक इच्छाएं रहती हैं तथा व्यक्तित्व रहता है। अगर यह चला जाता है तो केवल पवित्र आत्मा ही चमकती है। वास्तव में कर्त्ताभाव ही बंधन है, कर्म नहीं।

2. शांत हो जाओ और देखो कि "मैं ही भगवान हूँ"।

3. शिक्षा और शास्त्र ज्ञान साक्षर अज्ञान है। निरक्षरता भी अज्ञान है। दोनों ही को वास्तविक लक्ष्य का पता नहीं है। जबकि संत अज्ञानी नहीं है क्योंकि उसका कुछ भी लक्ष्य नहीं रह गया हैं उसने तो जो प्राप्त करना था, कर लिया है, इसलिये एक विद्वान पुरुष को भी निरक्षर संत के आगे झुकना पड़ता है।

4. अंत में तो गुरु भी अपने भीतर ही हैं। ध्यान इस अज्ञान को मिटाने के लिये है कि वह मैं नहीं हूं।

5. स्वयं को जानना ही स्वयं का होना है। 'मैं वहीं हूँ' यही संक्षेप में सारा सत्य है और शांत होना ही उसका तरीका है। शांत होने का अर्थ अपने जीवभाव का नाश कर देना है।

6. सत्य को प्राप्त कर लेना ही ज्ञान है। यह ध्यान से संभव है क्योंकि तब और सब विचारों को हटाया जा सकता है।

7. **'Akarma'** is whatever one does after the ego has vanished.

8. Still the mind and remain thoughtless. The Self is realised only when thoughts subside.

9. Self realisation is the primary and sole duty of man because if Self is known nothing else remains to be known. **Satguru's** grace is an essentiality in realisation and it is manifested by faith.

10. Guru's grace is always with us. All that is required of us is not to confound ourselves with extrovert mind, but to abide in the Self i.e., Guru's Grace and **Prasad**.

11. **Satguru** helps in eradication of Ignorance. (Does he hand over realisation to you ?) Guru's Grace is like a hand extended to help you out of water. It makes your way easier for removal of ignorance.

12. How is **Guru** gained by a devotee ? God who is all pervading in His Grace takes pity on the loving devotee and manifests himself as a being according to a devotee's standard. The devotee thinks that Guru is a man and expects relationship as between bodies but the **Guru** who is God incarnate works from within, helps the

7. अहंकार के नाश होने के बाद जो होता है उसे अकर्म कहते हैं।

8. मन को शांत करो और निर्विचार रहो। जब विचार शांत होते हैं तभी आत्मा उपलब्ध होती है।

9. आत्म साक्षात्कार ही मनुष्य का सर्वप्रथम कर्त्तव्य है क्योंकि यदि आत्मा को जान लें तो कुछ और जानने के लिये नहीं बचेगा। सत्गुरु की कृपा इसमें बहुत आवश्यक है और वह विश्वास से प्रकट होती है।

10. गुरु कृपा सदा ही हमारे साथ है। हमें यही करना है कि हम बाध्य मन के साथ न रह कर आत्मा में रहें, यही गुरु कृपा और गुरु प्रसाद है।

11. सत्गुरु अज्ञान हटाने में सहायता करता है (क्या वह साक्षात्कार तुम्हें दे देता है ? गुरु कृपा हाथ के रूप में संसार सागर में तुम्हें निकलने में सहायता करती है और अज्ञान से निकलने का मार्ग सहज करती है।

12. भक्त को गुरु किस प्रकार प्राप्त होता है ? सर्वव्यापक प्रभु प्रेमी भक्त पर करुणा करके उसी की योग्यता अनुसार अपने को गुरु रूप में प्रकट करता हैं। भक्त गुरु को शरीर करके ही समझता है, पर गुरु जो कि स्वयं भगवान् ही है, अंदर से कार्य करता है और भक्त की गलतियों को सुधार कर उसे ठीक मार्ग पर लगाता है और तब तक उसकी

devotee to see the error of his ways, guides him in the right path until he realises Self within. After such realisation by **Guru's** grace the disciple feels, sees nothing but self and remains in uninterrupted bliss.

13. **Guru** is both within and out. He creates conditions to drive you inward so that you may always abide in Self.

14. Ego is a very powerful elephant and cannot be brought under control by anyone less than a lion who is no other than our beloved **Satguru** whose very looks makes the elephant tremble and die. Ego submits when it recognises higher power. Such recognition is surrender to higher power i.e., **Satguru.**

15: Successful few owe their success to their perseverence in their pursuit of either :
(*a*) Surrender to **Satguru**
(*b*) Self Inquiry—Abiding in self.

16. Seeker of true peace should seek within himself the cause of his unrest and thus eliminate it.

17. **Vairagya** accompanied by ego is of no value whereas all possessions in the absence of ego do not matter.

सहायता करता है जब तक उसे आत्म साक्षात्कार नहीं हो जाता। गुरु की सहायता से आत्म साक्षात्कार करके शिष्य सिर्फ आत्मा ही देखता और जानता है और अनन्त आनंद में निवास करता है।

13. गुरु अंदर और बाहर दोनों ओर हैं। वह ऐसी स्थितियां उत्पन्न करता है कि तुम हमेशा अन्तर्मुखी होकर आत्मा में स्थित रह सको।

14. अहंकार शक्तिशाली हाथी के समान है और ये शेर से कम शक्ति वाले के वश में नहीं हो सकता। ऐसा शक्तिशाली सत्गुरु ही हो सकता है, जिसके दर्शन मात्र से ही अहंकार का हाथी कांपता है और मर जाता है। अहंकार जब अपने से ऊंची शक्ति पाता है तभी झुकता है। यह झुकना ही सत्गुरु के प्रति समर्पण है।

15. जो विरले मनुष्य आत्म साक्षात्कार कर पाए हैं, उनकी सफलता का कारण इन दो में से एक रहा है–

(क) सत्गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण।

(ख) आत्म विचार से सदा आत्म स्वरूप रहना।

16. शान्ति के खोजी को अशांति का कारण अपने अंदर ही खोजना चाहिये और इस प्रकार उसका निराकरण करना चाहिये।

17. अहंकार सहित वैराग्य का कोई मूल्य नहीं है, जबकि अहंकार रहित होकर सब पदार्थों में रहना भी कुछ अर्थ नहीं रखता।

18. God realisation cannot be expresed in words. It can be felt only in true silence and stillness of both speech and thoughts.

19. A strong conviction, a stern belief is necessary to realise "I am the Self".

20. Realise that truth is beyond "Speech and Intellect".

21. He who thinks is the doer is the sufferer. Believe in Justice of God for both joys and sorrows. Do not super-impose suffering on you.

22. Ego can be anhilated only in deep, unadulterated love for **Satguru.**

23. Let the mind be lost in the Supreme being to gain eternal Bliss.

24. In order to give up sense of doership, one must seek to find out. "Who the doer is" inquire within and the sense of doership will vanish.

25. **Satguru** helps us in getting rid of the delusion that I have not realised. His love draws us to him like a Magnet.

26. Realisation is to get rid of the delusion that I have not realised.

18. भगवत प्राप्ति को शब्दों में नहीं समझाया जा सकता। उसको तो केवल मौन और निर्विचारता में ही पाया जा सकता है।

19. ''मैं आत्मा हूं'' यह जानने के लिये अत्यन्त दृढ़ निश्चय की आवश्यकता है।

20. यह जानो कि सत्य वाणी और बुद्धि के परे है।

21. जिसमें कर्त्ताभाव है, वहीं दुखी है। भगवान् के न्याय में विश्वास रखो–सुख में भी और दुख में भी। अपने ऊपर दुखों को थोपो मत।

22. सत्गुरु में पूर्ण निश्चल प्रेम से ही अहंकार विलीन होता है।

23. अनंत आनंद प्राप्त करने के लिये मन को आत्माकार बना दो।

24. कर्त्ताभाव को छोड़ने के लिये देखना चाहिये कि कर्त्ता कौन है, अपने से पूछो तो कर्त्तापन की भावना खत्म हो जाएगी।

25. सत्गुरु यह भ्रम निवृत्त करने में हमारी सहायता करता है कि आत्मानुभव नहीं है। उसका प्रेम हमें चुम्बक की भाँति खींच लेता है।

26. जब हम इस भावना को कि हमने अपने को प्राप्त नहीं किया, छोड़ देते है, तभी अपने को प्राप्त कर लेते हैं।

27. Surrender yourself truly at the feet of **Satguru** and then you will really learn to know who the "I" is you are.

28. Just as a whole tree is curtained potentially in a seed, so the world is in the mind.

29. Liberation is Abondonment of the false values and remaining ever as being.

30. A **Jeevanmukt** is one who does not see anything separate from the Self.

31. Sink deep within and abide as the Self. You are already realised, ever realised and never non realised.

32. One cannot see God and yet retain individuality. The Seer and the Seen unite into one being.

33. Giving up thoughts by remaining as the self of the thinker, is both Bliss and Meditation.

34. Peace is absence of disturbed mind which is due to arising of thoughts in the individual.

35. To abide in peace means to be free of thoughts and to remain ever in pure consciousness. An advance seeker may directly hold the thinker and the thinker will automatically sink into his source—Pure consciousness.

27. जब तुम पूर्णतया सत्गुरु के चरणों में अपने को समर्पित कर दोगे तभी तुम वास्तव में जान पाओगे कि–तुम कौन हो।

28. जैसे सम्पूर्ण पेड़ बीज में छिपा हुआ है, इसी तरह संसार मन में छिपा है।

29. मुक्ति अज्ञान का छूट जाना और स्वयं में स्थित होना है।

30. जीवन मुक्त वही है जो स्वयं के अतिरिक्त कुछ नहीं देखता।

31. अपने में गहरी डुबकी लगाओ और स्वयं में ही रहो, तुम पहले से ही स्वयं को जानते हो, कभी भी ऐसा नहीं था कि तुम स्वयं को न जानते हो।

32. ऐसा होना असम्भव है कि तुम भगवान् को भी देखो और फिर अपना व्यक्तित्व भी बनाये रखो। दर्शक और दृश्य एक में ही समाहित हो जाते हैं।

33. सब विचारों को त्याग कर केवल विचार कर्त्ता के अस्तित्व को ही देखने में ध्यान और आनंद होता है।

34. अशांत मन विचारों की उत्पत्ति के कारण होता है, इसका न होना ही शांति है।

35. शांति में रहने का अर्थ है विचारों से खाली होना और सर्वदा आत्मा में रमण करना है। जागरूक जिज्ञासु सीधा विचारकर्त्ता को देखता है, तब विचारकर्त्ता अपने स्त्रोत में स्वयं लय हो जाता है, जो कि पवित्र चेतना है।

36. Be as asleep even in wake-up state, abiding in the self remaining uncontaminated and in sleep by what goes round you in the world.

37. In a sense of being Witness, within object to seer is also a form of duality. Truth lies beyond both subject and object. Just as Sun is vital for daily worldly activities, yet it does not form part of the same and still the activities cannot take place without the Sun. Thus in turn, Sun is truly, witness of its automatic activities, so is with the Self.

38. Duality always introduces Sin. Be above it to be being.

39. Distraction of mind can be checked only by always abiding in self and firm determination that I am the Self.

40. Bliss is to be free from thinking that "I am now out of Bliss".

41. As a scientist has a flash of illumination when he leaps across a logical gap, in his research, so the **'Sadhak'** gains courage and confidence with every eclipse of Ego.

42. Be like waveless ocean of deep bliss in firm determination of Self.

36. जागृत में भी सुषुप्ति की भाँति रहने का प्रयत्न करो और आत्म स्थित रहो। संसार में जो कुछ भी हो रहा है, उससे ऐसे असंग रहो जैसे निद्रा में रहते हैं।

37. साक्षीभाव भी एक भाँति का द्वैत ही है क्योंकि उसमें एक दृष्टा है और एक दृश्य। सत्य इससे भी परे है। जैसे सूर्य संसार के कार्यों के लिये आवश्यक है पर वह उसका हिस्सा नहीं है, पर उसके बिना भी संसार के कार्य नहीं हो सकते, इसी भाँति जिस प्रकार सूर्य से संसार के कार्य होते है पर वह उनका हिस्सा नहीं है। इसी भाँति आत्मा भी है अस्तित्व से होना है पर वह इसका भाग नहीं है।

38. द्वैत की अवस्था हमेशा पाप की अवस्था है इसलिये हमेशा आत्मा में वास करो।

39. मन की चंचलता को सिर्फ इस दृढ़ निश्चय से जीता जा सकता है कि "मैं आत्मा हूं"।

40. आनंद इस भ्रम से कि 'मैं आनंद में नहीं हूं' दूर होने में है।

41. जैसे वैज्ञानिक अपनी एक-एक उपलब्धि पर प्रकाश पाता है, वैसे ही जिज्ञासु भी अहंकार के विलीन होने पर साहस और धैर्य में प्रतिष्ठित होता जाता है।

42. आत्मा के दृढ़ निश्चय में तुम सर्वदा आनंद के लहरविहीन समुद्र की भाँति रहो।

43. Desire is like a Mirage which allures but never satisfies the soul.

44. Just as a screen is unaffected by a scene of burning, or a rising sea so is with the Self.

45. Realisation means true knowledge of Immortality of Self. Mortality is only an idea and cause of our misery.

46. Realised mind is the Holy spirit. And the other mind is home of Devil.

47. Only Gyan can wash off our Impurities.

48. God is not in Heaven but Heavenly.

49. Guru's Grace and then daily Satsang makes your mind stronger and stronger in remaining ever thoughtless even while engaged in work. Self is realised when thoughts cease.

50. My "**Satguru**"—

(*a*) Is more still than an ocean's depth.

(*b*) A paragon of Self control.

(*c*) Is aloof from even a whisper of excitement.

(*d*) Is spreading Moonlike grace and Sun like radiance.

43. इच्छा मृगतृष्णा के समान मन को भटकाती तो है, पर कभी संतुष्ट नहीं करती।

44. जैसे पर्दे पर चाहे आग का दृश्य हो चाहे समुद्र का, पर्दे पर कोई प्रभाव नहीं डालता ऐसे ही आत्मा में कोई प्रभाव बाह्य परिस्थिति का नहीं पड़ता।

45. आत्म जागृति का अर्थ आत्मा की अमरता को जान लेना है। नश्वरता केवल एक विचार है जो हमारे दुख का कारण होता है।

46. आत्म स्थित मन ही पवित्र है, अन्य मन शैतान का घर है।

47. सिर्फ ज्ञान से ही अपवित्रता धुल सकती है।

48. भगवान् स्वर्ग में नहीं है वरन् स्वर्गीय है।

49. गुरु कृपा और प्रतिदिन का सत्संग मन को निर्विचार अवस्था में रहने के लिये स्वस्थ बनाता है। बाहर से चाहे क्रियाशल रहे, आत्मज्ञान निर्विचार होने पर ही फलित होता है।

50. **मेरे सत्गुरु–**

(*i*) समुद्र से भी अधिक शांत है।

(*ii*) आत्म नियंत्रण का आदर्श है।

(*iii*) किसी भी हलचल से दूर है।

(*iv*) उनसे वो चन्द्रमा की भाँति कृपा व सूर्य की भाँति तेज बरसाता है।

(*e*) By his mere presence gives us effortless unearned **Samadhi**.

(*f*) By his freedom caught me and enslaved me into freedom.

(*g*) Guru is giver of Immortality.

(*h*) Is awareness beyond speech and thoughts.

(*i*) Is knowledge (Dispelling Ignorance) Nectar Ocean.

(*j*) Is fountain of Grace, unbounded and Unending bliss.

(*k*) Has sized my body for his abode.

(*l*) Has given Boundless bliss and shown glory of self.

51. If detatchment is firm within, then attachment in appearance outside of a sage is immaterial.

52. We mist Body to **Satguru** but the **Satguru** does not think himself so. He is the formless self i.e., within you. The master appears without only to guide us to abide within self.

53. The master is not outside you as you seem to imagine in ignorance. He is within, infact, the Self. Recognise this truth. Seek him within you and find there. Then you will have constant communication with him. The master being the self, his grace is inseparable from the self.

(*v*) सिर्फ उनकी उपस्थिति से ही प्रयत्न रहित समाधि हो जाती है।

(*vi*) उसने अपनी स्वतंत्रता से ही मुझे स्वतंत्र बना कर अपना मुरीद बना लिया।

(*vii*) गुरु ही अमरत्व प्रदान करते हैं।

(*viii*) शब्दों और विचारों से परे गुरु पवित्र जागृति है।

(*ix*) गुरु ही अज्ञान हटा कर ज्ञान देते हैं।

(*x*) गुरु कृपा का अनंत भण्डार तथा अनंत आनंद है।

(*xi*) गुरु ने मेरे शरीर को अपना निवास स्थान बना लिया है।

(*xii*) गुरु ने अनंत ज्ञान और आनंद का मार्ग दिखाया है।

51. यदि अन्तर में वैराग्य दृढ़ है तो संत के बाहर के सम्बन्ध अर्थहीन है।

52. हम सतगुरु को शरीर समझते हैं पर सतगुरु ऐसा नहीं समझता। वह तुम्हारे अंदर है और आकृति रहित है। गुरु केवल हमें अपने अंदर प्रतिष्ठित करने के लिये प्रकट होता है।

53. अज्ञान में जैसा कि तुम सोचते हो गुरु बाहर नहीं है। वास्तव में वह आत्मा ही है, इस सत्य को जानो। उसे अपने अंदर खोजो और वहीं पा लो। तब तुम हमेशा उससे सम्बन्ध स्थापित रख सकोगे, आत्मा होने के कारण ही उसकी कृपा भी आत्मा से ही प्रकट होती है।

54. Turn the mind within, Still it. And you will find all the objects within and shall be in blissful state even.

55. **Satguru's** hand is always extended towards us to prevent us from drowning in the sea of Ignorance.

56. "I am" is the abiding and fundamental reality. This pure existence is understood and felt by stilling the mind. Mind is the outgoing faculty of the Individual of that turned. Within, it becomes still in course of time. And that "I am" alone prevails. "I am" is the whole truth.

57. Pain of Diversity is Overcome by the Joy of Perception of Unity which is the Self.

58. **Jiwan Mukti** State is compared to the reflection of a spotless mirror, what can be found in such a reflection.

59. World is unreal only when viewed as apart from the self is real if & viewed as the self.

60. Satguru's silence is his loudest **Updesha** and grace in its highest form. If the Guru is silent, the seeker's mind gets purified by itself.

54. जब तुम मन को अर्न्तमुखी बनाओगे तो पाओगे कि सारा संसार अंदर ही है और तब तुम सदा आनंद में रह सकोगे।

55. अज्ञान के समुद्र में डूबने से हमें बचाने के लिये सत्गुरु के हाथ हमेशा आगे बढ़ते रहते हैं।

56. 'मैं हूं' यही वास्तविकता है। इस सत्य को मन स्थिर करके ही समझा जा सकता है। व्यक्ति का मन बार-बार बाहर जाता है। यदि उसे अर्न्तमुखी बना दिया जाये तो धीरे-धीरे वह शांत हो जाता है और वह इस सत्य को जान जाता है कि 'मैं ही हूं'।

57. अनेकता के दुख को आत्मा की एकता के आनंद से ही हटाया जा सकता है।

58. जीवन मुक्त उसी भांति निर्मल व स्वच्छ होता है जैसे हम एक शीशे में दूसरे शीशे का प्रतिबिम्ब देखें तो वहां केवल निर्मलता होती है शून्य होता है और कुछ नहीं।

59. संसार यदि आत्म स्वरूप से भिन्न भासता है तो असत्य है और संसार यदि आत्म स्वरूप ही भासता है तो सत्य है।

60. सत्गुरु का मौन ही उसकी सर्वोत्तम कृपा और उपदेश है। यदि गुरु मौन है तो जिज्ञासु का मन स्वयं ही पवित्र हो जाता है।

61. **Moun Diksha** is most perfect. It comprises looking, touching and teachings. It purifies the individual in everyway and establishes him in reality.

62. To turn the mind within, the man must directly settle in the 'I'. Then there is end of external activities and perfect peace prevails.

63. Thinking is not your real nature because thinking faculty arises in you in your waking state and you are dissociated from it in deep sleep state when you have no Body consciousness.

64. You can get release and freedom from bondage while living in family when you relinquish thought of my family. Only thought of "**I**" and family is only bondage from release.

65. "**Man**" is utmost eloquence and peace of mind is utmost activity because only in such a state, the person remains in his essential nature and permeates all recess of self.

66. Desire constitutes **Maya** and desirelessness is God.

67. If a devotee truly surrenders to his **Satguru**, the **Guru** within pulls him in self and Guru pushes him into the self. That is Satguru's grace on a truly surrendered devotee.

61. मौन दीक्षा ही सर्वोत्तम है। गुरु दृष्टि, स्पर्श और ज्ञान से जिज्ञासु को निर्मल बना कर सत्य में टिका देता है।

62. मन को अन्तर्मुखी बनाने के लिये मनुष्य को 'मैं' में टिकना चाहिये। तब बाहरी कर्म रुक जाते हैं और अंदर शांति ही शांति हो जाती है।

63. सोचना तुम्हारा वास्तविक स्वरूप नहीं है। क्योंकि सोचने की शक्ति तब उत्पन्न होती है–जब तुम जागते हो। जब तुम गहरी नींद सोते हो तब देहध्यास से रहित होते हो और तब नहीं सोचते।

64. यदि तुम अपनेपन की भावना छोड़ दो तो परिवार में रह कर भी सत्य को प्राप्त कर सकते हो। सिर्फ 'मैं' और 'मेरे' का विचार ही बन्धन का कारण है।

65. मौन ही बोलने की सीमा है और शांति ही क्रिया की सीमा है क्योंकि उसी दशा में मनुष्य अपने वास्तविक स्वरूप में होता है।

66. इच्छा ही माया है और निरिच्छा होना ही भगवान् होना है।

67. यदि कोई भक्त सच्चे मन से सतगुरु को समर्पण करता है, गुरु अंदर से उसे खींचता है और गुरु ही बाहर से भी उसे अंदर आत्मा की ओर करता है। सच्चे भक्त के लिये ये ही सतगुरु की कृपा होती है।

68. **Atam Vidya** is the easiest because it is Self which is so obvious. While any other **Vidya** requires a knower, knowledge and the object to be known.

69. Just as the river does not continue its flow after its discharge into the ocean, so also a person loses all external activities and doership after he merges in the self.

70. Liberated me is He who is always in self and never mixes non-self with self. He is truly desireless and egoless.

71. **Gyan** is **Siddhi**, while all **Yoga, Kama Yoga, Bhakti Yoga** are also **Sadhanas**. Only a **Gyani** is a true **Yogi** and a true **Bhakta**.

72. **"Nishkam Karma"** is unselfish action and willing renunciation.

73. When mine is given up it is **"Chit Shuddi"** i.e., purified mind and when **'I'** is given up it is **Gyan**.

74. Eternal vigilance is the price of Liberation.

75. Happiness is born of peace and peace can reign only when there is no disturbance of thoughts arising in Mind. When the Mind is itself absent, there will be perfect peace and happiness, unless one himself is happy, he cannot bestow happiness on other.

68. आत्म विद्या सबसे सरल है क्योंकि आत्मा तो स्वयं है ही और अन्य सभी विद्या प्राप्त करने के लिये ज्ञाता, ज्ञान और फिर किसी विषय की आवश्यकता होती है जिसे जाना जाये।

69. जिस प्रकार समुद्र में मिल जाने के पश्चात् नदी का स्वयं का प्रवाह रुक जाता है, ऐसे ही आत्माकार होने के पश्चात् मनुष्य के बाहरी कर्म तथा कर्ताभाव समाप्त हो जाते हैं।

70. भक्त वही है जो सदा आत्मा में निवास करता है और जो आत्मा, अनात्मा को कभी नहीं मिलाता है। वही वास्तव में निरिच्छा व निरअहंकार है।

71. ज्ञान ही सिद्धि है, बाकी अन्य योग जैसे कर्मयोग, भक्तियोग आदि सब साधनाएं हैं। सिर्फ ज्ञानी ही एक सच्चा योगी व सच्चा भक्त होता है।

72. निष्काम कर्म बिना स्वार्थ के किया गया कर्म होता है तथा सहज त्याग होता है।

73. जब हम 'मेरे' से ऊपर उठते हैं तो मन शुद्ध हो जाता है और जब 'मैं' को त्याग देते हैं तो ज्ञान होता है।

74. सतत जागरुकता ही मुक्ति का मूल्य है।

75. आनंद शांति से उत्पन्न होता है और शांति तभी होती है जब विचारों की अराजकता मन मे न हो। बल्कि जब मन ही नहीं होता तभी पूर्ण आनंद और शांति होती है और जब तक कोई स्वयं आनन्दित नहीं होता, वह दूसरे को आनन्दित नहीं कर सकता।

76. Stillness of the Sage is eternal and intense activity and should never be mistaken for inertness as this stillness vibrates peace and happiness vigorously to all true seekers.

77. **'Jagrat Sushupti'** is the natural State of a Gyani. He is ever aware of the Self even in Deep Sleep Stage.

78. Even if illusion veils vision of reality revealed in blessed silence of **Satguru's** presence. Yet the inner urge to realise Self remains and grows stronger more insistent as grace and search go hand in hand.

79. "Devotee to Satguru" I Pray to thee as Myself for light and guidance that I know are even there and at Thy feet. Lay offerings of Unchanging Love.

80. Stillness is the aim of the True Seeker.

81. Gyani is always **Jagrat Sushupti** i.e., he is in awareness of waking state and stillness of sleep. It is beyond Wakefulness and Deep Sleep. It is a state of perfect awareness and perfect stillness combined.

82. Gyani goes to the root of thoughts and reaches stillness of sleep. But in full vigour of search i.e., with perfect awareness.

76. मन की स्थिरता आलौकिक और गूढ़ है और इसे कभी नीरसता समझने की भूल नहीं करनी चाहिए। यही स्थिरता अन्दर की शांति और खुशी हर सच्चे जिज्ञासु को झंझोड़ देती है।

77. 'जागृत सुषप्ति' ज्ञानी की स्वाभाविक स्थिति है। वह सोते में भी पूर्णतया आत्मा में जागृत होता है।

78. चाहे माया का परदा हमारी सच की दृष्टि को ढक दे, वो सत्गुरु की शांति और आशीर्वाद में सामने आती है। तब भी स्वयम् को जानने की अन्दर की जिज्ञासा रहती है और दृष्ट होती है और भी ज्यादा दृढ़ हो जाती है, जैसे गुरु कृपा और खोज हाथ में हाथ डाले चलते हैं।

79. भक्त गुरु से कहता है "मैं आपसे अपनी ही आत्मा जानकर प्रकाश और निर्देशन की प्रार्थना करता हूं और यह भी जानता हूं कि मैं आपसे सदा ही प्राप्त हैं। मैं आपके चरणों में अपना अपरिवर्तनशील और अनंत प्रेम भेंट करता हूं।

80. सच्चे जिज्ञासु का उद्देश्य शान्त अवस्था प्राप्त करना ही है।

81. ज्ञानी सदा ही जागृत सुषुप्ति में है। उसमें जागृत अवस्था की जागरुकता और सुषुप्ति की शांति है। यह अवस्था जागृत और सुषुप्ति दोनों से ऊपर है। उसमें पूर्ण जागरुकता और पूर्ण शांति निहित है।

82. ज्ञानी विचार की जड़ तक जाता है और निद्रा की शान्ति में पहुंचता है पर रहता पूर्ण जागरुक अवस्था में है।

83. **"Jagrat Sushutpi"** is bliss eternal.

84. If you are free from thoughts yet aware, you are that perfect being.

85. The Greatest achievement of Life is Bliss i.e., attained only by **"Atam Gyan"**.

86. The most important Goal of Life is, To be Still and know thyself.

87. Those who reach the state of thought-lessness shall see God. For them the material-istic world disappears and only God Exists.

88. God can only be realized in your own self, not by any external efforts like temple going or **"Karamkand"**.

89. Life is like a Plain Paper on which what we write shows our personality. As we think so we become. Their is no Happiness and sorrows in our life, But it all depends on our vision.

90. World is an Eco which only reflects what we speak.

91. Self realization is death of worldly thoughts and gives strength to your concentration.

83. जागृत, सुषुप्ति ही अनंत आनंद है।

84. यदि तुम निर्विचार हो और पूर्णतया जागृत हो तो तुम उच्च आत्मावस्था में हो।

85. आनंद की उपलब्धि ही जीवन में सबसे ऊंची और सबसे अच्छी कला है और यह आत्मज्ञान से प्राप्त होती है।

86. मनुष्य के सामने सबसे बड़ी साधना और सबसे बड़ा लक्ष्य है—किसी भी भांति वह अपने भीतर प्रवेश कर जाए और स्वयं को जान लो।

87. जो निर्विचारणा को साधते हैं, उन्हें दर्शन उपलब्ध होता है। तब जगत, पदार्थ नहीं प्रभु दिखाई पड़ता है।

88. जिन लोगों ने परमात्मा को जाना है उन्होंने किसी मंदिर में जाकर उसको नहीं जाना है, उन्होंने अपने भीतर जाकर उसको पाया है।

89. जीवन कोरा कागज है—इस पर हम जो भी लिखते हैं वहीं हमारी कथा हो जाती है। इसको हम जिस भांति देखते हैं, वैसा ही हो जाता है। सुख-दुख जीवन में नहीं हमारी दृष्टि में है।

90. संसार एक **'इकोपाइंट'** है जहां जो भी आवाज हम देते हैं, वही हमारे पास लौटकर आती है।

91. दर्शन विचार की मृत्यु है, दर्शन ध्यान का प्राण है।

92. Good thinking, Good Sayings, Good Deeds are different and after all these; by expecting God's will and dissolving your Ego—is a revolutionary change which is called **"Satsang"**.

93. **"Satsang"** is the real fruit of all the good deeds done in all the Births of Lifes.

94. Impartial Justice is the Purest Mercy of God.

95. Be as pure as your Father is in Heaven.

96. True Renunciation comes in the company of True Guru.

97. Your True determination of self i.e., "I am **Aatma**" does not require any external belief or support. Its your faith in your ownself.

98. The world is a Myth and only God is True.

99. Winning yourself is True Victory.

100. Grief Teaches you—Lesson of Sacrifice, Learn it by Heart to be fearless.

101. Fulfillment of desires attaches you to the materialistic world and farewell to desires brings you to the threshold of Love of the Endless.

102. Present is the most precious of all possessions. To use time wisely is to use life wisely.

92. सत्चर्चा, सत्कार्य और सत्चिन्तन–ये अलग है और सतचर्चा सत चिन्तन और सत्कार्य के बाद जो जीवन है उसको स्वीकार करना, उसके आधार पर स्वयं को, अहं को, 'मैं' पने को बदल डालना सत्संग कहलाता है।

93. जब अनेक जन्मों से संचित पुण्य कर्मों का पुनः उदय होता है तब मनुष्य को सत्संग की प्राप्ति होती है।

94. भगवान् कभी पक्षपात या जुल्म नहीं करता। निष्पक्ष न्याय ही उसकी सबसे पवित्र रहम है।

95. अपने परमपिता की तरह पवित्र हो जाओ।

96. पक्का वैराग्य गुरुसंग से ही आता है।

97. 'मैं आत्मा हूं' उसके लिये किसी के विश्वास की जरूरत नहीं, किसी से पूछने की भी जरूरत नहीं। **''गुरुमुख नाम झपैं इक बार।''**

98. जगत का सब सहारा झूठा है, केवल आत्मा का निश्चय ही सत्य है।

99. अपने पर विजय पाना सबसे शानदार विजय है।

100. दुख त्याग का पाठ पढ़ाने आता है, उसको पढ़ लो और अभय हो जाओ।

101. कामना की उत्पत्ति और पूर्ति जगत की आसक्ति पैदा करती है और कामना की निवृत्ति अनन्त की प्रीति जागृत करती है।

102. सब वस्तुओं से अधिक महत्वपूर्ण वर्तमान समय है। समय के सदुपयोग में ही समस्त जीवन का सदुपयोग निहित है।

103. God Resides in the Temple of Love, not anything else.

104. Truth is Omni present and all Powerful but the shortest and quickest way to reach it is your Own Self.

105. True Spritual knowledge is the knowledge of your Ownself (Aatma).

106. Idol Worship have two components, the Idol and the Devotee But "Aatam Gyan" have none. It is the pure knowledge of "One" (God).

107. The State of mind where the consciousness is pure, thoughtless and free from desires and uncertainities, is the experience of State of True Self.

108. Stop searching for your self, to find your Ownself.

109. The Person who has attained his ownself, has the skill to use his assets for his own progress or otherwise; he is preparing for his doom.

110. Free yourself from Imposed thoughts to realise the power of your Own thoughts.

111. The person who has not realised his Own Self is a Pauper (Poor).

112. The greatest astonishment of Life is that it becomes your only when you leave it.

103. प्रेम के मंदिर को छोड़कर किसी और मंदिर की खोज में जो जाता है, वह परमात्मा मे और दूर ही निकल जाता है।

104. सत्य तो सब जगह है, समग्र सत्ता में वही है। किन्तु उस तक पहुंचने का निकटतम मार्ग स्वयं में ही है।

105. आत्मानुसंधान के अतिरिक्त और कोई खोज धार्मिक खोज नहीं है।

106. पदार्थ ज्ञान में ज्ञाता है और ज्ञेय है। आत्म ज्ञान में न ज्ञेय है न ज्ञाता। वहां तो मात्र ज्ञान है। वह शुद्ध ज्ञान है।

107. चेतना जहां निर्विषय है, निर्विचार है, निर्विकल्प हैं, वहीं जो अनुभूति है, वही स्वयं का साक्षात्कार है।

108. सब भांति की खोज छोड़ते ही चेतना वहीं पहुंच जाती है, जहां वह सदैव से ही है।

109. मनुष्य यदि स्वयं को जाने और जीते तो उसकी शेष सब जीतें उसकी और उसके जीवन की सहयोगी होंगी। अन्यथा वह अपने ही हाथों अपनी कब्र के लिये गड्ढा खोदेगा।

110. विचार की शक्ति को जगाना है तो उधारे विचारों से स्वतंत्र होना होगा।

111. जिसने सत्य को-आत्मिक सत्य को नहीं जाना वह दरिद्र है।

112. कैसा आश्चर्य है कि मिट कर ही जीवन मिलता है। जो जीवन से चिपटे हैं, वे उसे खो देते हैं।

113. When the consciousness reaches the stage of total dissolution and Enlightenment there occurs a revolution which is beyond Imagination. This Transition is the biggest Transition of Human Life. This revolution changes the whole life of being and is priceless. The Revolution makes the being to develop Self Esteem. The experience is beyond words and the being reaches the stage of True Bliss. He is above life and death & becomes "Immortal". This revolution marks the beginning of a True Life.

114. The sprituality begins with step of Bravery. Sprituality is the Zenith of Bravery because requires self Dissolution and Renunciation of Material Desires.

115. True Bhakti is surrender of Ego to the self.

116. The Guru is one who at all times abides in the profound depth of the Self.

117. God, Guru and Self are the same.

118. Guru says, "Submit to me and I will strike down the Mind".

119. The purpose of self Enquiry is to focus the entire mind at its source.

120. To abide firm in the Reality which is Eternal is the True "**Siddhi**".

121. True Renunciation is the Renunciation of Desires, Passion and Attachment.

113. शून्यता और जागरुकता जब पूर्ण हो जाती है तो चित्त एक ऐसी क्रान्ति से गुजरता है जिसकी साधारणत: कोई कल्पना भी नहीं हो सकती। उस परिवर्तन से बड़ा कोई परिवर्तन मनुष्य जीवन में नहीं है। वह क्रान्ति अमूल्य है और उसके द्वारा सारा जीवन रूपान्तरित हो जाता है। इस क्रान्ति के द्वारा व्यक्ति स्वयं में प्रतिष्ठित होता है। अनिवर्चनीय आलोक का अनुभव करता है, इसी आलोक में वह अपने सच्चिदानन्द स्वरूप को जानता है। मृत्यु मिट जाती है और अमृत के दर्शन होते हैं। वास्तविक जीवन की शुरुआत इसी अनुभूति के बाद ही होती है।

114. जिसमें साहस नहीं है, वे धार्मिक नहीं हो सकते। धर्म मनुष्य जीवन का चरम साहस है क्योंकि वह स्वयं को शून्य करने और विसर्जित करने का मार्ग है।

115. अपनी मैं का पूर्ण समर्पण ही सच्ची भक्ति है।

116. सच्चा गुरु वो है जो हर समय अपने स्वरूप की गहराई में रहता है।

117. भगवान्, गुरु और आत्मा एक ही है।

118. गुरु कहता है "कि तुम मुझे समर्पित हो जाओ और मैं तुम्हें तुम्हारे मन, बुद्धि पर विजय दिलाऊंगा।

119. अपने मन, बुद्धि को अपने स्वरूप में केन्द्रित करना ही आत्म निरीक्षण का उद्देश्य है।

120. अपने सत्य स्वरूप का अडोल निश्चय करना ही परम सिद्धि को पाना है।

121. इच्छाओं, आसक्तियों का त्याग ही सच्चा त्याग है।

122. On the Realisation of the Self, Everything becomes clear and all problems are solved.

123. To transcend birth and death, we have therefore to transcend the process of thought and abide in the Eternal being.

124. On whatever plane, the Mind happens to act, it creates a body for itself. In the physical world, A Physical Body, in the Dream world a Dream body which becomes wet with dream rain and sick with dream diseases. After the death of the physical Body, the mind remaining inactive for sometime, as in dreamless sleep, when it remains worldless and therefore bodyless. But soon it becomes active again in a New World and a New Body, the Astral-till it assumes another body in what is called a "Rebirth". But the 'Gyani'—the Self realised man whose mind has already ceased to Act, remains unaffected by death. It has dropped never to rise again to cause Births and Deaths, the chain of Illusions snapped forever for him.

125. Think of God and attachments will gradually drop from you.

126. Fate is overcome by Gyan, Self-knowledge, which is beyond will and fate.

127. Materialistic desires will make you a bondage of this world.

122. अपने स्वरूप में आने पर सच और झूठ की सही पहचान हो जाती है तथा सभी समस्याओं का अंत हो जाता है।

123. तुम अपने ही विचारों को परिवर्तन कर, अपने आत्म स्वरूप को जाग्रति द्वारा जन्म मरण से बचा सकते हो।

124. मन जिस तल पर भी खड़ा हो वह अपने जीव भाव द्वारा एक काल्पनिक जगत, एक काल्पनिक शरीर की रचना कर लेता है। एक काल्पनिक देह जो काल्पनिक वर्षा से ही भीग कर बीमार पड़ जाती है। तब यह बीमार शरीर मरता है तो मन थोड़े समय के लिए स्थित हो जाता है, जैसे कि बिना स्वप्न के नींद। इस स्थिति में मन जगत से परे है और जीव भाव से भी दूर है। पर जैसे ही वह एक नया शरीर धारण करता है तो फिर अपने काल्पनिक जगत में लौट आता है जिसे **''पुनर्जन्म''** कहते हैं। पर ज्ञानी जिसने अपने स्वरूप को जाग्रत कर अपने मन पर विजय प्राप्त की है वह इस क्रिया से अप्रभावित है। उसने अपने को पूर्ण रूप से मिटाकर; जन्म मरण के चक्रव्यूह का नाश कर दिया है और अपने काल्पनिक जगत की प्रलय कर दी है।

125. परमात्मा के सिमरन से इच्छाओं और आसक्तियों का सहज त्याग हो जाता है।

126. आत्म ज्ञान द्वारा प्रारब्ध पर भी विजय प्राप्त की जा सकती है क्योंकि वह इच्छा और प्रारब्ध से ऊपर है।

127. संसार से आशा करने में ही संसार की दासता निहित है।

128. Deem it your good fortune if by the grace of God you are able to help any of his sons—(Vivekananda).

129. Helping others will help you know your True Self.

130. Devotion to God with a heart full of pure love and True Renunciation can help you break free. Than the heart fills with his grace and thus you realize God in your own self which makes you free from all doubts and bondage.

131. God can only be realized with true Love ; not by any Customs and Rituals.

132. This Country respects people with escapist attitude in a Marvellous way. We have been respecting—Those who have run away from their responsibilities or have become enemies of their own lives itself. Than who is responsible, you tell me; If it leads to a dull or a monotonous life. One who makes his life beautiful and devotes all his energy to this knowledge is a true saint. The exceptance of life as it comes to you is **"True Sanyas"**.

128. यदि ईश्वर के अनुग्रह से उसकी किसी संतान की सेवा कर सको तो अपना सौभाग्य मानो। (विवेकानन्द)

129. दूसरों के प्रति किया गया थोड़ा भी कार्य अन्तस्थ सत्य को और भी प्रकाशित कर देता है।

130. विचार-वैराग्य से पुष्ट भगवान की प्रेममयी भक्ति से संसार की समस्त आसक्तियां मिट जाती हैं जब हृदय आनंद से भर जाता है, तब भगवान् के तत्व का अनुभव अपने आप में हो जाता है। हृदय में आत्मस्वरूप भगवान का साक्षात्कार होते ही हृदय की ग्रन्थि टूट जाती हैं, सारे संदेह मिट जाते हैं और कर्म बन्धन क्षीण हो जाता है।

131. "आशिकी से मिलेगा ऐ जाहिद, बन्दगी से खुदा नहीं मिलता।"

132. इस देश में पलायनवादी एस्केपिस्ट प्रवृत्तियों को अद्‌भुत रूप से पूजा मिली है। जो लोग जीवन छोड़ दें, जीवन से भाग जायें, जीवन के शत्रु हो जायें, इन सबको आदर हम देते हैं। फिर अगर जीवन उजड़ जाता है, जीवन बेरौनक हो जाता हो, दुख से भर जाता हो तो जिम्मेदार कौन ? ऐसा ही व्यक्ति धार्मिक है जो इस जीवन को सुंदर बनाता है। जिस आदमी ने अपने पूरे प्राणों को इस विद्या में संलग्न कर दिया है, वहीं सन्यस्त है। जीवन जैसा है उसकी एकाग्रता को, उसकी स्वीकृति को ही मैं सन्यास कहता हूं। जीवन को पूरे ढंग से जीना ही सन्यास है, भाग जाना नहीं, आंख बंद कर लेना नहीं।—रजनीश।

Seven Realities

1. The only real Love is the Love for Infinity, which arises from an intense longing to know and become one with the truth.

2. The only real existence is that of the one and only one who is Self.

3. The only real sacrifice is that in which in persuance of this love one sacrifices the Selfishness, Ego and Self centeredness.

4. The only real renunciation is that which abondons even in the midst of worldly duties all selfish thoughts.

5. The only real knowledge is the knowledge that Divine is the inner dweller in Good People and so called bad, in Saint and so called Sinner.

6. The only real control is the discipline of the senses from indulgence in low desires which alone ensures absolute purity of character.

7. The only real surrender is that in which the poise is undisturbed by any adverse circumstances and the acceptance of every kind of hardship of resigned with perfect calm to the will of Divine.

सात सच्चाईयाँ

1. वास्तविक प्रेम केवल अनंत के लिये प्रेम है, जोकि सत्य को जानने और उसमें एक होने की तीव्र इच्छा से होती है।

2. वास्तविक सत्ता केवल आत्मा की है।

3. वास्तविक बलिदान स्वार्थ, अहंकार का है जो प्रेम की राह में चलने में हो जाता है।

4. वास्तविक त्याग वही है जिससे कि सांसारिक कर्त्तव्यों के और स्वार्थ विचारों के बीच भी निर्लेप रहा जा सके।

5. वास्तविक ज्ञान यह ज्ञान होना है कि अच्छे और बुरे, संत और पापी सबमें वही दिव्य आत्मा है।

6. वास्तविक संयम अपनी इन्द्रियों को निम्न इच्छाओं में जाने से नियंत्रण करना है, इससे ही चरित्र में निर्मलता आती है।

7. वास्तविक समर्पण वहीं है जिससे कि प्रतिकूल परिस्थितियों में भी संतुलन खराब न हो, प्रत्येक प्रकार की तकलीफ़ को भगवान् की इच्छा जान कर संतोष पूर्वक स्वीकार कर सकें।

Points from Dadaji's Letter

1. Do nothing and everything is done.
2. He who loseth Life, shall find Life.
3. Forget yourself to realise yourself.
4. Unless you are born again, you cannot see the kingdom of God.
5. You be still and your body will be Active.
6. Majestic Silence comes from Heaven and Activity comes from Earth. Both Meet and Merge.
7. The Sun sets, yet never dies, But returns, neither shall I go into Non-existence, But I shall live i.e., "Immortality".
8. Lord Buddha said, "Neither Obstinence from Fish and Flesh, nor going naked, No shaving of the Head, nor dressing in a Rough Garment, Nor Covering with Dirt, Nor Sacrificing to Agni, will cleanse a man who is not free from Dilusion.
9. Let him Eat and Drink according to the need of the Body.
10. The best prayer is Healing of a broken Heart.
11. Fast mind is Sick Mind, Slow Mind is Healthy mind and Still Mind is Divine Mind.

दादा भगवान् के अनमोल वचन

1. कुछ भी न करो और देखो, सब हुआ ही पड़ा है।
2. जिसने अपने जीव भाव को खोया उसी ने परमात्मा को पाया है।
3. खुदी को भूलकर ही खुदा को पा जा।
4. बिना गुरुमुख से हुए नए जन्म के, परमात्मा के राज्य में जाना असम्भव है।
5. तुम (आत्मा) स्थिर रहो और शरीर को कार्य करने दो।
6. पूर्ण शांति ईश्वर की देन है और कर्म सृष्टा द्वारा संचालित होते हैं। मनुष्य देही में दोनों का मिलन होता है।
7. जिस प्रकार सूर्य का अंत नहीं होता, वह अस्त होता है और अगले दिन फिर लौट आता है उसी प्रकार ''मैं'' अजर अमर हूं, मेरा कभी नाश नहीं है।
8. बुद्ध भगवान् ने कहा–''न मास मच्छी छोड़ने से, न निर्वस्त्र होने से, न सर मुंडा लेने से, न भगवुआ वस्त्र धारण कर लेने से, न शरीर पर राख मल लेने से न अग्नि को समर्पित होने से, किसी भी व्यक्ति का उदय तब तक शुद्ध नहीं होगा तब तक वह जगत को सच मानकर बैठा है।
9. शरीर को उसकी आवश्यकता अनुसार ही चलने दो, तुम शरीर नहीं हो।
10. किसी के अशांत मन को शांत करना ही सबसे उत्तम भक्ति है।
11. अस्थिर मन माना अस्वस्थ मन, शांत मन माना स्वस्थ मन और स्थिर मन माना ब्रह्म।